MCEM
Maitreya College of Education & Management
Shaping Education
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

1. Preparation of lesson plans

LESSON PLAN NO.

Date ....

विषय
Subject: भूगोल (हमारी दुनिया)

कक्षा व वर्ग
Class & Section: 8th (अ)

उपविषय
Sub. Subject/Unit: अध्याय - 01

कालांश
Period: 6

प्रकरण
Topic: संसाधन

अवधि
Duration: 40 मिनट

विद्यालय का नाम (Name to the School) ....

विशिष्ट उद्देश्य
Specific Objectives

1- शिक्षार्थियों को संसाधन के अर्थ से परिचित करा सकेंगे।
2- शिक्षार्थियों को संसाधन के प्रकार की समझ देना।

शिक्षण सहायक सामग्री
Teaching Aids/TLM

शिक्षार्थियों को संसाधन की समझ देने के लिए कक्षा-कक्ष में उपस्थित संसाधनों को वास्तविक रूप में दिखाया जायेगा। तथा संसाधनों के प्रकार का वर्गीकरण चार्ट पेपर पर प्रदर्शित कर दिखाया जायेगा।

पूर्व ज्ञान/पूर्व व्यवहार
Previous Knowledge/Entering Behaviour

शिक्षार्थी दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले संसाधनों की सामान्य समझ रखते हैं।

प्रस्तावना
Introduction

प्रशिक्षु क्रिया Trainee Teacher's Activity	शिक्षार्थी संभावित क्रियाएँ Prob. Student's Activities
प्रश्न- हम दैनिक जीवन में किन-किन चीजों (वस्तुओं) का उपभोग करते हैं?	उत्तर- हम अपने दैनिक जीवन में पानी, अनाज, भोजन, परिवहन के साधन, फल, कुर्सी-मेज, बर्तन आदि संसाधनों का प्रयोग करते हैं।
प्रश्न- परिवहन के साधन कहाँ चलते हैं?	उत्तर- परिवहन के साधन सड़क पर चलते हैं।
प्रश्न- सड़क किन-किन पदार्थों से बनी होती है?	उत्तर- सड़क- ईंट, पत्थर, सीमेंट, मिट्टी, बालू, अलकतरा इत्यादि पदार्थों से बनी होती है।
प्रश्न- ईंट, बालू, पत्थर, सीमेंट, इत्यादि क्या है?	उत्तर- ईंट, बालू, पत्थर और सीमेंट सड़क निर्माण के संसाधन हैं।
प्रश्न- संसाधन को परिभाषित करें?	उत्तर- संभावित उत्तर प्राप्त हुआ।

उद्देश्य कथन
Statement of Aim

बच्चो! आज हम लोग संसाधन और उसके प्रकार के विषय में विस्तार से अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन Expected behavioural outcome (EBO'S)		
शिक्षण बिन्दु Teaching Points	अनुदेशनात्मक उद्देश्य एवं उनका विशिष्टीकरण Instructional Objectives with their specifications	प्रशिक्षु क्रियाएं Trainee teacher's activities
		प्रस्तुतिकरण
संसाधन का अर्थ	शिक्षार्थी संसाधन का अर्थ बता सकेंगे एवं इसकी समझ विकसित कर सकेंगे।	विकासात्मक प्रश्न प्रश्न - भवन (घर) बनाने वाली कुछ संसाधनों के नाम बताइए? प्रश्न - संसाधन किसे कहते हैं? स्पष्टीकरण - संसाधन का अर्थ - मनुष्यों की आवश्यकता को पुरा करने वाली समस्त वस्तुएं, पदार्थ एवं जीव-जन्तु, संसाधन कहलाती है। जैसे - भुमि, जल, भवन, खनिज पदार्थ, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु, मजदूर इत्यादि। इन्हें हम अपनी आवश्यकताओं के अनुसार उपयोग करते हैं जिससे हमारी जरूरत पुरी होती है। प्रश्न - आप सभी शिक्षार्थी अपने आस-पास की वस्तुओं की सूची बनाइये, जिसका आपने आज उपयोग किया है।

अधिगम अनुभव Learning Experience (LE'S)		वास्तविक अधिगम उपलब्धियां Real Learning Outcome (RLO's)
सम्भावित विद्यार्थी क्रियाएँ Prob. Students activities	शिक्षण नीतियाँ, विधियाँ एवं युक्तियाँ, शिक्षण अधिगम सामग्री एवं बोर्ड का प्रयोग Strategies Methods, Techniques, Use of Board and TLM	उद्देश्य केन्द्रित मूल्यांकन Objective based evaluation
उत्तर- बालू, ईंट, पानी, सीमेण्ट, मजदूर इत्यादि।	प्रश्नोत्तर प्रविधि	
उत्तर- अस्पष्ट उत्तर प्राप्त हुआ।		
सभी शिक्षार्थी शिक्षक की बातों को ध्यान पूर्वक सुनते हुए संज्ञान लेंगे।		
	विविध प्रकार के संसाधनों का प्रदर्शन व्याख्यान सह प्रदर्शन विधि	
उत्तर- शिक्षार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में वस्तुओं को याद कर सूची बनायेंगे।	विषय - सामाजिक विज्ञान कालाधा-6 उपविषय - भूगोल कक्षा -6th प्रकरण - संसाधन भूमि, जल, भवन पेड़-पौधे, पशु मजदूर प्रश्नपत्र कार्ड	मूल्यांकन प्रश्न -
उत्तर- चाक, ब्लैक बोर्ड, किताब, चार्ट पेपर, कुर्सी इत्यादि।	प्रश्नोत्तर प्रविधि	आप के शिक्षक ने आज आपके सामने किन - किन संसाधनों का प्रयोग किया।

अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन Expected behavioural outcome (EBO'S)		प्रशिक्षु क्रियाएँ Trainee teacher's activities
शिक्षण बिन्दु Teaching Points	अनुदेशनात्मक उद्देश्य एवं उनका विशिष्टीकरण Instructional Objectives with their specifications	
संसाधन के प्रकार	शिक्षार्थी संसाधनों के विविध प्रकारों को समझते हुए इसकी व्याख्या कर सकेंगे।	विकासात्मक प्रश्न प्रश्न- संसाधनों को कितने भागों में विभक्त किया जा सकता है ? स्पष्टीकरण - संसाधनों के निर्माण की प्रकृति के आधार पर इन्हें तीन भागों में विभक्त किया जाता है। संसाधन के प्रकार प्राकृतिक संसाधन: पानी, बालू, लकड़ी, पत्थर, कोयला, अनाज, इत्यादि मानव निर्मित संसाधन: टेबल, यातायात के साधन, सड़क, पंखा, ब्रेड, कपड़े, इत्यादि मानव संसाधन: शिक्षक, डॉक्टर, मजदूर, सैनिक, किसान, विक्रेता, इंजीनियर, इत्यादि

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

अधिगम अनुभव Learning Experience (LE'S)		वास्तविक अधिगम उपलब्धियाँ Real Learning Outcome (RLO's)
संभावित विद्यार्थी क्रियायें Prob. Students activities,	शिक्षण नीतियाँ, विधियाँ एवं युक्तियाँ, शिक्षण अधिगम सामग्री एवं बोर्ड का प्रयोग Strategies Methods, Techniques, Use of Board and TLM	उद्देश्य केन्द्रित मूल्यांकन Objective based evaluation
उत्तर - मनुष्य की आवश्यकता को पुरा करने वाली समस्त वस्तुएं, पदार्थ, जीव-जन्तु संसाधन कहलाते हैं।		प्रश्न - संसाधन का अर्थ अपने शब्दों में बताइये।
उत्तर - अस्पष्ट उत्तर प्राप्त हुआ।	प्रश्नोत्तर प्रविधी	
	सम्प्रत्यय निर्माण	
सभी शिक्षार्थी, शिक्षक की बातों को ध्यान पूर्वक सुनते हुए संज्ञान लेंगे और मुख्य बातों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।	शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग कक्षा में उपलब्ध उपकरणों (संसाधनों) के आधार पर किया जायेगा।	
	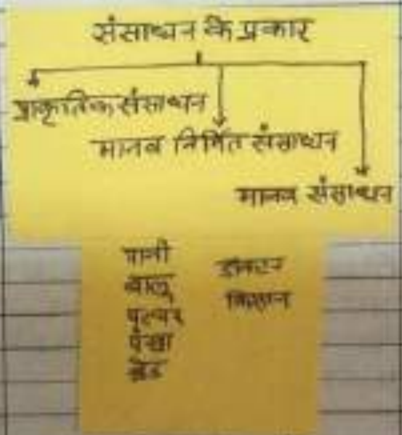	
	श्याम पट्ट कार्य	
	आगमन विधी	

अपेक्षित व्यवहार परिवर्तन Expected behavioural outcome (EBO'S)		
शिक्षण बिन्दु Teaching Points	अनुदेशनात्मक उद्देश्य एवं उनका विशिष्टीकरण Instructional Objectives with their specifications	प्रशिक्षु क्रियाएं Trainee teacher's activities
		बोधात्मक प्रश्न किसान किस प्रकार का संसाधन है? प्रश्न- किसान किसका उत्पादन करता है?
श्याम पट्ट सारांश-	शिक्षार्थी बार-बार अभ्यास द्वारा अपनी लेखन क्षमता का विकास कर सकेंगे।	
गृह कार्य	शिक्षार्थी अभ्यास द्वारा अर्जित ज्ञान को स्थायित्व प्रदान कर सकेंगे।	गृह कार्य - प्रश्न - संसाधन से आप क्या समझते हैं? लिखे। प्रश्न - प्राकृतिक संसाधन के कुछ उदाहरण लिखें?

अधिगम अनुभव Learning Experience (LE'S)		वास्तविक अधिगम उपलब्धियां Real Learning Outcome (RLO's)
संभावित विद्यार्थी क्रियाएँ Prob. Students activities	शिक्षण नीतियाँ, विधियाँ एवं युक्तियाँ, शिक्षण अधिगम सामग्री एवं बोर्ड का प्रयोग Strategies Methods, Techniques, Use of Board and TLM	उद्देश्य केन्द्रित मूल्यांकन Objective based evaluation
उत्तर- किसान एक मानव संसाधन संसाधन है।	प्रश्नोत्तर प्रविधि	
उत्तर- किसान अनाज एवं सब्जी का उत्पादन करता है।		
		मूल्यांकन प्रश्न-
उत्तर- संसाधन तीन प्रकार के होते हैं ① मानव संसाधन ② प्राकृतिक संसाधन ③ मानव निर्मित संसाधन	प्रश्नोत्तर प्रविधि	संसाधनों के तीनो प्रकार बताइए ?
उत्तर- यातायात के साधन मानव निर्मित संसाधन है।		प्रश्न - यातायात के साधन किस प्रकार का संसाधन है ?
	श्याम पट्ट सारांश संसाधन के प्रकार प्राकृतिक संसाधन मानव निर्मित संसाधन मानव संसाधन	
शिक्षार्थी अपनी अभ्यास पुस्तिका में प्रश्नो को लिखेंगे और घर से इनका लिखकर लाएँगे।		
		[signature]

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

मूल्यांकन चार्ट (EVALUATION CHART)

A- Excellent अति उत्तम   B- Very Good उत्तम   C- Good संतोषजनक   D- Average साधारण   E- Weak निकृष्ट

अवलोकन के बिन्दु Points of Observation		Rating A	B	C	D	E	सुधार हेतु सुझाव Suggestions for improvement
अध्यापक Teacher	आत्मविश्वास Confidence						
	वेश–भूषा Dress						
भाषा–प्रवाह Language Fluency	आवाज की स्पष्टता Clarity of Voice						
	हाव–भाव Expression						
प्रस्तावना Introduction	प्रेरणात्मक Motivation						
	पूर्वज्ञान पर आधारित Based on Previous Knowledge						
पाठ योजना Lesson Plan	उद्देश्य व्यावहारिक रूप में Objectives in Beh. Terms						
	छात्र क्रिया का महत्व Importance of Student activity						
उचित शिक्षण अधिगम सामग्री का चयन Selection of appropriate TLM							
	मूल्यांकन प्रश्न Evaluatory Questions						
प्रस्तुतीकरण Presentation	विधिवत Systematic						
	छात्र अध्यापक अन्तः क्रिया Student teacher interaction						
	प्रश्नों का स्तर Level of Questions						
	प्रश्नों का कक्षा में वितरण Distribution of Questions						
	प्रश्न पूछने की विधि Strategy of question						
	उदाहरण का स्तर Level of example						
प्रश्न पूछने हेतु प्रेरित करना Motivate them for asking questions							
	शिक्षण अधिगम सामग्री का प्रयोग Use of Teaching learning						
छात्र Student	छात्रों की कठिनाइयों का [illegible] Solution of problems						
	बैठने की व्यवस्था Seating Arrangement						
	अनुशासन Discipline						
	[illegible] Cleanliness						
	छात्रों की पाठ में रुचि एवं ध्यान Interest and Attention						
बोर्ड कार्य	प्रविष्टिया Entries						
	क्रमबद्धता Sequence/Organisation						
	संकेतक का प्रयोग Focusing/Use of Pointer						
शुद्ध एवं सुन्दर Accurate & Good	लेखन Writing						

पर्यवेक्षक के हस्ताक्षर
Signature of Supervisor

Lesson Plan Evaluation chart

/5

Classroom Teaching Learning Observation Sheet.

अध्यापक	आत्मविश्वास, (Confidence)	– शिक्षक जब योजना बनाकर शिक्षण करता है। तो उस शिक्षण में उसकी तैयारी की झलक दिखती है। उसकी विषय पर तैयारी उसके आत्मविश्वास को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त उसके शिक्षण कार्य का अनुभव भी उसके आत्मविश्वास को बढ़ा देता है।
	वेश-भूषा (Dress)	– एक शिक्षक या शिक्षिका का वेश-भूषा ऐसा हो जो उसके व्यक्तित्व को निखारे। इसके लिए सरल व्यवस्थित ढंग से हो। कपड़े (साड़ी, सलवार-सूट, पैंट-शर्ट) साफ सुथरा एवं व्यवस्थित ढंग से पहने गये हों।
भाषा-प्रवाह	आवाज की स्पष्टता (Clarity Of Voice)	– शिक्षक-शिक्षिका की आवाज में भाषा स्पष्टता लिए हो। तथा आवाज कक्षा में अंतिम पंक्ति में बैठे बच्चे तक पहुँचती हो।
	हाव-भाव (Expression)	– हाव-भाव भाषा के सहायक के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं। जिस प्रकार का वाक्य विन्यास होता है उसी को ध्यान में रख कर हाव-भाव किया जाता है। हाव-भाव में चेहरे की विभिन्न मुद्रायें, हाथों के इशारे आते हैं।
प्रस्तावना	प्रेरणादायक (Motivation)	– बच्चों का पाठ में ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से प्रस्तावना का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक प्रस्तावना प्रश्न प्रेरणादायक तभी होगी जब जो बच्चों का ध्यान विषय पर आकर्षित करे।
	पूर्व ज्ञान पर आधारित	– प्रस्तावना प्रश्न के माध्यम से शिक्षक-शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान की जाँच करता है। इसी पूर्वज्ञान के आधार पर शिक्षक विषय को आगे बढ़ाता है। पूर्व ज्ञान से तात्पर्य शिक्षक कक्षा में जो पढ़ाने जा रहा है उसके विषय में शिक्षार्थियों की कितनी समझ है।
सीखने की योजना (Learning Plan)	उद्देश्य व्यावहारिक रूप में	– बच्चों का अधिगम किस स्तर तक प्राप्त करना है इसका उल्लेख शिक्षक, शिक्षण करने से पूर्व व्यावहारिक रूप में लिखकर निश्चित कर देता है।
	छात्र क्रिया को महत्व	– शिक्षक अपनी, सीखने की योजना में शिक्षार्थी, छात्र को कितना महत्व देता है। उद्देश्यों के आधार पर शिक्षक छात्रों की विभिन्न क्रिया कराता है, जिससे उनका अधिगम स्थायी हो सके।
उचित शिक्षण अधिगम सामग्री का चयन		– शिक्षार्थियों के अधिगम को आसान या अधिगम में सहायता करने के उद्देश्य से TLM का प्रयोग शिक्षकों के द्वारा किया जाता है। जो शिक्षण विषय से संबंधित होती है। TLM स्वनिर्मित हो सकता है या आस-पास में उपस्थित कोई भी सामग्री जो विषय को समझाने में मदद करे।
	मूल्यांकन प्रश्न	– शिक्षक अपने सीखने की योजना के अनुसार पूर्व निर्धारित उद्देश्यों की जाँच करने के उद्देश्य से समय-समय पर कक्षा में किसी क्रिया या प्रश्नों के माध्यम से जो प्रश्न शिक्षार्थियों से पूछता रहता है उसे मूल्यांकन प्रश्न कहते हैं।
प्रस्तुतिकरण	विधिवत (Systematic)	– योजनानुसार शिक्षक जब शिक्षण करता है, उसे विधिवत शिक्षण कहते हैं, योजनानुसार जब शिक्षक, पूर्वज्ञान पर आधारित प्रस्तावना प्रश्न पूछते हुए पाठ की शुरुआत करता, इसके उपरान्त पाठ का विस्तार करते हुए शिक्षार्थियों से संवाद करता है शिक्षार्थियों के प्रश्नों का उत्तर देता है। तथा विषय वस्तु को समझाने के लिए उदाहरणों एवं TLM का प्रयोग करता रहता है और अंत में एक उद्देश्य के अनुसार मूल्यांकन प्रश्न पूछ कर अपने उद्देश्य की जाँच करता है। इस प्रकार से पढ़ाये गये पाठ को विधिवत अध्यापन कहलाता है।

Lesson Plan Evaluation chart

15

Classroom Teaching Learning Observation Sheet.

अध्यापक,

आत्मविश्वास, (Confidence) – शिक्षक जब योजना बनाकर शिक्षण करता है। तो उस शिक्षण में उसकी तैयारी की झलक दिखती है। उसकी विषय पर तैयारी उसके आत्मविश्वास को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त उसके शिक्षण कार्य का अनुभव भी उसके आत्मविश्वास को बढ़ा देता है।

वेश–भूषा (Dress) – एक शिक्षक या शिक्षिका का वेश–भूषा ऐसा हो जो उसके व्यक्तित्व को निखारे। इसके लिए बाल व्यवस्थित ढंग से हो। कपड़े (साड़ी, सलवार –सूट, पैंट–शर्ट) साफ सुथरा एवं व्यवस्थित ढंग से पहले गये हो।

भाषा–प्रवाह,

आवाज की स्पष्टता (Clarity Of Voice) – शिक्षक–शिक्षिका की आवाज मे भाषा स्पष्टता लिए हो। तथा आवाज कक्षा में अंतिम पंक्ति में बैठे बच्चे तक पहुँचती हो।

हाव–भाव (Expression) – हाव–भाव भाषा के सहायक के रूप में प्रयुक्त किए जातें हैं। जिस प्रकार का वाक्य विन्यास होता है उसी को ध्यान में रख कर हाव–भाव किया जाता है। हाव–भाव में चेहरे की विभिन्न मुद्रायें, हाथो के इसारे आतें हैं।

प्रस्तावना,

प्रेरणादायक (Motivation) – बच्चों का पाठ में ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से प्रस्तावना का प्रयोग किया जाता है। प्रत्येक प्रस्तावना प्रश्न प्रेरणादायक तभी होगी जब जो बच्चों का ध्यान विषय पर आकर्षित करे।

पूर्व ज्ञान पर आधारित – प्रस्तावना प्रश्न के माध्यम से शिक्षिक–शिक्षार्थी के पूर्व ज्ञान की जाँच करता है। इसी पूर्वज्ञान के आधार पर शिक्षक विषय को आगे बढ़ाता हैं। पूर्व ज्ञान से तात्पर्य शिक्षक कक्षा में जो पढ़ाने जा रहा है उसके विषय में शिक्षार्थीयों की कितनी समझ हैं।

सीखने की योजना (Learning Plan)

उदेश्य व्यावहारिक रूप में – बच्चों का आधीगम किस स्तर तक प्राप्त करना है इसका उल्लेख शिक्षक, शिक्षण करने के पूर्व व्यावहारिक रूप में लिखकर निश्चित कर देता हैं।

छात्र क्रिया को महत्व – शिक्षक अपनी, सीखने की योजना में शिक्षार्थी, छात्र को कितना महत्व देता है। उदेश्यों के आधार पर शिक्षक छात्रों को विभिन्न क्रिया कराता है, 'जिससे उनका अधिगम स्थायी हो सके।

उचित शिक्षण अधिगम सामाग्री का चयन – शिक्षार्थियों के अधिगम को आसान या अधिगम मे सहायता करने के उदेश्य से TLM का प्रयोग शिक्षकों के द्वारा किया जाता है। जो शिक्षण विषय से संबधित होती है। TLM स्वनिर्मित हो सकता है या आस–पास मे उपस्थित कोई भी सामाग्री जो विषय को समझाने में मदद करें।

मूल्यांकन प्रश्न – शिक्षक अपने सीखने की योजना के अनुसार पूर्व निर्धारित उदेश्यों की जाँच करने के उदेश्य से समय–समय पर कक्षा में किसी क्रिया या प्रश्नो के माध्यम से जो प्रश्न शिक्षार्थियो से पूछता रहता है उसे मूल्यांकन प्रश्न कहते है।

प्रस्तुतीकरण,

विधिवत (Systematic) – योजनानुसार शिक्षक जब शिक्षण करता है, उसे विधिवत शिक्षण कहतें हैं, योजनानुसार जब शिक्षक, पूर्वज्ञान पर आधारित प्रस्तावना प्रश्न पूछते हुए पाठ की शुरुवात करता, इसके उपरान्त पाठ का विस्तार करते हुए शिक्षार्थियो से संवाद करता है शिक्षार्थियों के प्रश्नों का उत्तर देता हैं। तथा विषय वस्तु को समझाने के लिए उदाहरणों एवं TLM का प्रयोग करता रहता है और अंत में एवं उदेश्य के अनुसार मूल्यांकन प्रश्न पूछ कर अपने उदेश्य की जाँच करता है। इस प्रकार से पढ़ाये गये पाठ को विधिवत अध्यापन कहलाता है।

छात्र अध्यापन अन्तःक्रिया	– शिक्षार्थी एवं शिक्षक किसी विषय वस्तु पर आपस में प्रश्नोत्तरी, वार्तालाप एवं क्रिया के माध्यम से जब जुड़ते या क्रिया करते है। उसे छात्र–अध्यापक अन्तःक्रिया कहते है।
प्रश्नों का स्तर	– प्रश्नों का स्तर बच्चों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर पूछा एवं बनाया जाना चाहिए।
प्रश्नों का कक्षा में वितरण	– प्रश्न सदैव समूहिक होते है। पर शिक्षक उदेश्यों के आधार पर प्रश्न समूहिक एवं व्यक्तिगत आधार पर पूछ सकता हैं। शिक्षक प्रश्न कक्षा में क्रमशः सभी छात्रों से पूछे।
प्रश्न पूछने की विधि	– शिक्षार्थियों से प्रश्न समूहिक आधार पर पूछे। जो शिक्षार्थी उत्तर देने के लिए हाथ खड़ा करे,उससे शिक्षक उसका नाम संबोधित कर प्रश्न पूछे।
उदाहरण का स्तर	– उदाहरण का स्तर शिक्षार्थियों के बोध स्तर को ध्यान में रखकर दिया जाय। जो विषयवस्तु से सीधा संबंध रखता हो।
प्रश्न पूछने हेतु प्रेरित करना	– शिक्षार्थियों की समझ या जिज्ञासा को शांत करने हेतु शिक्षक – शिक्षार्थियों को प्रेरित करता है की विषय वस्तु से संबन्धित न समझने योग्य बातों को प्रश्न के माध्यम से पूछे।
छात्र (Student) छात्रों की कठिनाइयों का हल	– शिक्षक,शिक्षण प्रक्रिया के बीच चाहे वे विषय की समझ से संबन्धित हो या छात्र की व्यक्तिगत समस्या हो, जो अधिगम में बाधा उपस्थित कर रही हो, उसका समाधान शिक्षक को करना चाहिए।
(Seating Arrangement) बैठने की व्यवस्था	– कक्षा में शिक्षार्थियों के बैठने की समुचित व्यवस्था होनी चाहिए। कक्षा में छोटे से बड़े क्रम में बैठे। ऐसे शिक्षार्थी जो विशेष आवश्यकता वाले (अंधे,बहरे,दिव्यांग, विकलांग) हो उनको दरवाजे के पास पहली पंक्ति में बैठाना चाहिए।
अनुशासन	– आत्म अनुशासन, लोकतान्त्रिक अनुशासन सबसे अच्छा होता है। अनुशासन बनाने के लिए शिक्षक विभिन्न शब्दों, हाव–भाव, कक्षा मे टहलकर या विभिन्न क्रियाओ के माध्यम से स्थापित करता है। जिससे शिक्षण आधिगम प्रक्रिया पूर्ण हो सके।
स्वच्छता	– कक्षा में छात्र स्वच्छ स्थान पर बैठे। साथ ही शिक्षार्थियों के कपड़े व शरीर स्वच्छ होने चाहिए। शिक्षार्थी जो भी कक्षा कार्य या गृह कार्य करे उसमे स्वच्छता दिखे।
छात्रों की पाठ में रुचि का ध्यान	– शिक्षक, शिक्षार्थियों को ऐसे पढ़ाये, जिससे उनकी रुचि एवं ध्यान निरन्तर विषय पर बना रहें।
श्याम पट्ट कार्य – प्रविष्टिया (Entries)	– दिनांक, कालांश, कक्षा, विषय , प्रकरण Topic एवं पाठ का विस्तार के अनुसार Sub Topic श्यामपट्ट पर लिखा होना चाहिए।
Sequence/क्रमबद्धता	– शिक्षण सदैव व्यवस्थित ढग से क्रमशः क्रमबद्ध होना चाहिए। इसलिए श्यामपट्ट कार्य भी क्रमबद्ध एवं उदेश्य के आधार पर किया जाना चाहिए।
संकेतो का प्रयोग	– श्यामपट्ट या TLM की ओर शिक्षार्थियों का ध्यान आकर्षित करने के शब्दों या Pointer के माध्यमों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

शुद्ध एवं सुन्दर – लेखन व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान होती है।

– शुद्ध एवं सुन्दर लेखन पढ़ने योग्य होता है जो पीछे बैठा शिक्षार्थि आसानी से पढ़ व समझ सकता है।

MCEM MAITREYA COLLEGE OF EDUCATION AND MANAGEMENT
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna
EPIP Campus, Industrial Area, Hajipur -844102

एकीकृत पाठ योजना
INTEGRATED LESSON PLAN

दिनांक 09-01-2023 कक्षा 9th
विषय भूगोल
प्रकरण भारत का भौतिक स्वरुप समयावधि 15 मिनट

प्रशिक्षु क्रिया	शिक्षार्थी संभावित क्रियायें
प्रश्न- विश्व कुल कितने महाद्वीपों मे विभाजित है ? (शाबाश) बहुत अच्छे	उत्तर- विश्व कुल सात महाद्वीपों मे विभाजित है।
प्रश्न- इन सात महाद्वीपो मे भारत किस महाद्वीप का भाग है? हाँ मे सिर हिलाते हुए।	उत्तर :- भारत एशिया महाद्वीप का हिस्सा है।
प्रश्न :- एशिया महाद्वीप के दक्षिण मे अवस्थित विश्वप्रसिद्ध पर्वत श्रृंखला कौन सी है? बहुत अच्छा	उत्तर- हिमालय पर्वत श्रृंखला है ?
प्रश्न- हिमालय पर्वत श्रृंखला के दक्षिण मे कौन-कौन सी नदियाँ विशाल मैदान बनाती है?	उत्तर- हिमालय पर्वत श्रृंखला के दक्षिण में गंगा, यमुना एवं ब्रह्मपुत्र नदीयाँ विशाल मैदान बनाती है।
प्रश्न- भारतीय क्षेत्र को पर्वतीय एवं मैदानी के आधार पर और किन भौतिक स्वरूपों मे बांटा जाता है? नही गलत उत्तर प्राप्त हुआ	उत्तर- संभावित उत्तर प्राप्त हुआ।

उद्देश्य कथन :- बच्चों! आज हम सभी भारत के भौतिक विभाजन के अन्तर्गत मुख्य भौगोलिक वितरण को विस्तार से अध्ययन करेंगे।

विकासात्मक, प्रश्न - भारत की प्रमुख खदानें किन राज्यों में पायी जाती हैं?

उत्तर - भारत की प्रमुख खदाने झारखण्ड, उड़ीसा एवं छत्तीसगढ़ राज्य में पायी जाती है।

प्रश्न; इन तीनो राज्यों की खदाने किस पठारी क्षेत्र के भाग है?

उत्तर:- संभावित उत्तर प्राप्त हुआ।

स्पष्टीकरण -

भारत को मुख्य: ६ भौगोलिक स्वरूपों में विभाजित किया गया है।

① हिमालय पर्वत श्रृंखला
② उत्तरी मैदान
③ दक्षिण का पठार / प्रायद्वीपीय पठार
④ भारतीय मरुस्थल
⑤ तटीय मैदान
⑥ द्वीप समूह

श्याम पट्ट कार्य

भारत को भौगोलिक भागों में विभाजित किया किया गया है -

1- हिमालय पर्वत श्रृंखला
2- प्रायद्वीपीय पठार
3- भारतीय मरुस्थल
4- उत्तरी मैदान
5- तटीय मैदान
6- द्वीप समूह

चित्र की ओर संकेत करते हुए।

मूल्यांकन, प्रश्न - भारत का भौतिक विभाजन कितने भागों में में किया गया है?

प्रश्न - सबसे पुराना भूभाग कौन सा है?

मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट
हाजीपुर, वैशाली

This Lession Plan is created by
Harendra Kumar Roll – 87,
Session – 2017-19 Under the Guidance
of Assit. Pro. **Ajay Kumar Singh.**

Ajay Kumar Singh
Asst. Prof., MCEM, Hajipur

DR. GYANDEO MANI TRIPATHI
PRINCIPAL
MAITREYA COLLEGE OF EDUCATION MANAGEMENT HAJIPUR, BIHAR

पाठ-योजना

दिनांक - 24/02/2019 | **कक्षा – 9वीं**

विषय – गणित | **समय – 45 मिनट**

प्रकरण:- लम्बतीय बेलन

विद्यालय – टाउन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हाजीपुर

बेलन (Cylinder)

परिभाषा:-

- किसी गोल एवं लम्बी ठोस आकृति को बेलन कहते है।
- समवृतीय बेलन एक त्रीविमीय वस्तु (three dimensional) है, जिसके आधार दो समांतर सर्वगासम वृत होते है बगलीय पृष्ट आयत होते है।

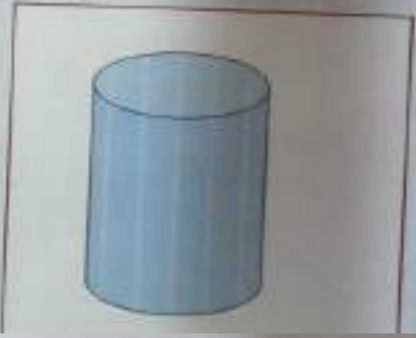

- **आधार एवं भुजा:-** बेलन का आधार हमेशा सर्वागसम और एक दूसरे के समांतर होते है। यदि आप बेलन को खोले तो चपटा करने पर आप बगल को आयत के रुप में पाएगें।
- **उंचाई:-** उंचाई (h) दोनों आधारों के बीच के दूरी होती है।
- **त्रिज्या:-** बेलन की त्रिज्या (r) आधार की त्रिज्या होती है।

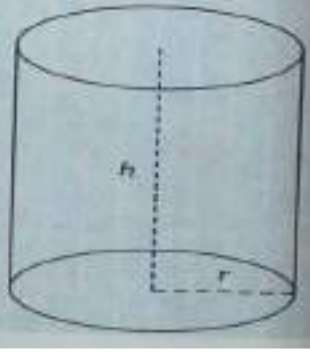

क्षेत्रफल

- **वक्रीय पृष्ठ का क्षेत्रफल:-** उपर्युक्त के अनुसार बेलन का क्षेत्रफल खुलकर आयाताकार क्षेत्र बनता है।
- इस आयत की चौड़ाई बेलन की ऊंचाई अर्थात (h) होती है और आयत की लम्बाई बेलन के आधार का परिमाप अर्थात (2πr) होता है।
- **अतः वक्रीय पृष्ठ का क्षेत्रफल:-**

सम्पूर्ण पृष्ठ का क्षेत्रफल

- बेलन का कुल पृष्ठ क्षेत्रफल =

= वक्रीय पृष्ठ का क्षेत्रफल (C) + 2 (आधार वृत का क्षेत्रफल)

$$= 2\pi r(h+r)$$

आयतन
बेलन का आयतन =
आधार का क्षेत्रफल * ऊंचाई
π r²
*
h
आयतन = πr²h
DR. GYANDEO MANI TRIPATHI
PRINCIPAL 24-02-2019
MAITREYA COLLEGE OF EDUCATION MANAGEMENT HAJIPUR BIHAR
Ajay Kumar Singh
24.02.2019

धन्यवाद !!
Thank you!!

2. Developing assessment tools for both online and offline learning

Achievement Test / Blue Print

1. संप्राप्ति परीक्षण (ACHIEVEMENT TEST) के लिए ब्लूप्रिंट निर्माण की कार्यशाला
2. विषय - कुल प्रश्न= 50
3. कक्षा - समयावधि =2 घंटा
4. पढ़ाए गए अध्याय का नाम :-

अध्याय संख्या	विषय का शीर्षक	प्रश्नों की संख्या	भारांक
1	पर्यावरण एवं मानव संबंध	10	20%
2	परिस्थितिकी एवं जैव विविधता	8	16%
3	पर्यावरण प्रदूषण एवं संरक्षण	18	36%
4	ग्रीन हाउस ओज़ोन गैस एवं अम्ल वर्षा	7	14%
5	मानव पोषण -प्रोटीन एवं विटामिन	7	14%
	योग	50	100%

5. प्रश्नों की संख्या:- 50
6. कुल भारांक :- 100%
7. प्रश्नों के प्रकार:- A) बहुविकल्पीय प्रश्न (Multiple choice Question)
   B) सत्य / असत्य प्रश्न (True/ False Question)
   C) रिक्त स्थान पूर्ति (Fill in the Blanks)
   D) मिलान प्रश्न (Matching Question)
   E) लघु उत्तरीय प्रश्न (Short answer type)
8. प्रश्नों के स्तर :- 1)- ज्ञान स्तर
   2)- बोध स्तर
   3)- प्रयोग स्तर
   4)- सृजनात्मकता स्तर
      A -विश्लेषण स्तर
      B -संश्लेषण स्तर
      C -मूल्यांकन स्तर
9. प्रश्नों के प्रकार, संख्या एवं भारांक :-

क्रम संख्या	प्रश्नों के प्रकार	संख्या	भारांक
1	बहुविकल्पीय प्रश्न	15	30%
2	सत्य / असत्य प्रश्न	15	30%
3	रिक्त स्थान पूर्ति	10	20%
4	मिलान प्रश्न	5	10%
5	लघु उत्तरीय प्रश्न	5	10%
		योग = 50	100%

24/01/2023
Ajay Kumar Singh
Asst. Prof., MCEM, Hajipur

10. प्रश्नों के स्तर, संख्या एवं भारांक :-

क्रम संख्या	प्रश्नों के स्तर	संख्या	भारांक
1	ज्ञान स्तर	11	22%
2	बोध स्तर	13	26%
3	प्रयोग स्तर	14	28%
4	सृजनात्मकता स्तर	12	24%
	कुल योग =	50	100%

11. अध्याय शीर्षक के अनुसार,प्रश्नों के प्रकार,(संख्या एवं भारांक)

क्रम संख्या	अध्याय का शीर्षक	बहुविकल्पी प्रश्न	सत्य/असत्य प्रश्न	रिक्त स्थान पूर्ति	मिलान प्रश्न	लघु उत्तरीय प्रश्न
1	पर्यावरण एवं मानव सम्बंध	1 (2%)	7 (14%)	1 (2%)	——	1 (2%)
2	पारिस्थितिकी एवं जैवविविधता	2 (4%)	4 (8%)	——	——	2 (4%)
3	पर्यावरण प्रदूषण एवं संरक्षण	6 (12%)	2 (4%)	5 (10%)	4 (8%)	1 (2%)
4	ग्रीन हाउस,ओज़ोनगैस,एव अम्लवर्षा	2 (4%)	1 (2%)	4 (8%)	——	——
5	मानव पोषण ,प्रोटीन एवं विटामिन	4 (8%)	1 (2%)	——	1 (2%)	1 (2%)
50/100%		15 (30%)	15(30%)	10(20%)	5(10%)	5(10%)

12. प्रश्नों के स्तर/प्रश्नों के प्रकार के अनुसार (संख्या एवं भारांक)

प्रश्नों का स्तर

क्रम संख्या	प्रश्नों के प्रकार	ज्ञान स्तर	बोध स्तर	प्रयोग स्तर	सृजनात्मकता स्तर
1	बहुविकल्पी प्रश्न	3 (6%)	2 (4%)	6 (12%)	4 (8%)
2	सत्य /असत्य प्रश्न	2 (4%)	4 (8%)	2 (4%)	7 (14%)
3	रिक्त स्थान पूर्ति	4 (8%)	4 (8%)	2 (4%)	——
4	मिलान प्रश्न	1 (2%)	2 (4%)	2 (4%)	——
5	लघु उत्तरीय प्रश्न	1 (2%)	1 (2%)	2 (4%)	1 (2%)
	कुल योग =	11 (22%)	13 (26%)	14 (28%)	12 (24%)

खण्ड- क (बहुविकल्पीय प्रश्न)

नीचे दिये गए प्रश्नों में प्रत्येक में चार विकल्प दिये गए हैं सही विकल्प छांटिए-

1. पर्यावरण के मुख्यत: भाग हैं-
   A. 4 B. 5 C. 3 D. 2
2. जैविक घटक के अंतर्गत आते हैं-
   A अकार्बनिक पदार्थ B जीव जन्तु C पेड़-पौधे D B और C दोनों
3. पोलिथीन बैग के स्थान पर प्रयोग करना चाहिए -
   A. प्लास्टिक बैग का B. कपड़े के थैले का C. कागज के थैले का D. B और C दोनों
4. तरल प्रदूषक का एक उदाहरण है-
   A. सीसा B. डिटर्जेंट C. क्लोरो फ़्लोरो कार्बन D. मिथेन
5. विटामिन ए प्राप्त होता है-
   A. पपीता से B. नींबू से C. पालक से D. सभी से
6. इनमे से सबसे अधिक स्वास्थ्य वर्धक है-
   A. दाल B. अंडा, मछली C. दूध D. केला
7. कूड़ा कूड़ेदान में डालना चाहिए क्यों ?
   A. प्रदूषण रोकने के लिए B. बीमारियों से बचने के लिए C. केवल कूड़ा निस्तारण के लिए D. A और B दोनों
8. ध्वनि की चाल सर्वाधिक होती है-
   A. ठोस में B. गैस में C. निर्वात में D. द्रव में
9. किस आपदा के कारण मानव को सर्वाधिक नुकसान होता है ?
   A. भूकंप से B. भूस्खलन से C. बाढ़ से D. आँधी से
10. समाचार पत्र में कौन सा प्रदूषक होता है ?
    A. पारा B. सीसा C. कैडमियम D. मैंगनीज
11. निम्न गैस के उत्सर्जन को कम करके ग्रीन हाउस के प्रभाव को कम कर सकते हैं-
    A. मिथेन B. सल्फर डाइऑक्साइड C. नाइट्रोजन ऑक्साइड D. कार्बन डाइऑक्साइड
12. शीतल पेय की बोतलों में CO_2 क्यों भरी जाती है ?
    A. बोतल को ठंढा करने हेतु B. लंबे समय तक सुरक्षित रखने हेतु C. स्वाद बढ़ाने हेतु D. पेय पदार्थ को रंगीन बनाने हेतु
13. गंगा को प्रदूषण मुक्त करने की आवश्यकता क्यों है ?
    A. गंगा की पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने हेतु B. आस्था को बनाए रखने हेतु C. गंगा राष्ट्रीय नदी है D. कुछ लोगों की मांग की वजह से
14. बंगाल की अपेक्षा पंजाब में गेहूं अधिक क्यों खाया जाता है ?
    A. वहाँ गेहूं अधिक पैदा होता है B. उनकी अपनी पसंद है C. वहाँ चावल नहीं उगता है D. कुछ अन्य कारणों से
15. प्रोटीन का मुख्य स्रोत है -A मांस व दालें B. चावल व गेहूं C. दूध एवं जूस D. हरी सब्जियाँ

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

खण्ड ख (सत्य/असत्य)

1. सबसे तेज दौड़ने वाला पशु चीता है ? (सत्य/असत्य)
2. पर्यावरण शिक्षा सभी को नहीं दी जानी चाहिए ? (सत्य/असत्य)
3. विटामिन्स के अभाव मे मनुष्य की तुरंत मृत्यु सम्भव है ? (सत्य/असत्य)
4. हम श्वसन क्रिया मे Co2 ग्रहण करते है एवं C2 छोड़ते है ? (सत्य/असत्य)
5. वायुमंडल में No2 की मात्रा 78% होती है ? (सत्य/असत्य)
6. भोजन श्रृंखला के पिरामिड मे प्राथमिक उपभोक्ता सभी शाकाहारी होते है ? (सत्य/असत्य)
7. सघन वनीकरण दवारा हम अवर्षा की समस्या से निपट सकते है? (सत्य/असत्य)
8. मानव सभ्यता का विकास नदियों के किनारे हुआ है क्योंकि ये जीवन दायिनी हैं ? (सत्य/असत्य)
9. अम्ल वर्षा का मुख्य कारण समुद्री प्रदूषण है ? (सत्य/असत्य)
10. चिड़ियाघर हिंसक पशुओ को बांधने के हेतु बनाया जाता है ? (सत्य/असत्य)
11. भारत में जनसंख्या अधिक है क्योंकि इसकी जलवायु गर्म है ? (सत्य/असत्य)
12. पर्यावरण विषय का अध्ययन हम भूगोल विषय के अंतर्गत करते हैं ? (सत्य/असत्य)
13. पर्यावरण में O2 की मात्रा बढ़ाकर श्वास रोगों से बच सकते हैं ? (सत्य/असत्य)
14. भोजन श्रृंखला वन्य जीवों के कारण ही बनती है ? (सत्य/असत्य)
15. बेन्जीन कैंसर का कारण है अतः इसे पेट्रोल में 3.5% से घटाकर 1% (आयतन) के स्तर पर लाकर बचाव कर सकते हैं ? (सत्य/असत्य)

खंड - ग रिक्त स्थान की पूर्ति

1. जल एक ________ है
2. अम्ल का स्वाद ________ होता है
3. ध्वनि की चाल ठोस कि अपेक्षा द्रव मे ________ होती है
4. O3 की स्थिति ________ मण्डल मे है
5. विश्व ओज़ोन दिवस ________ को मनाया जाता है
6. ग्लोबल वार्मिंग हेतु सर्वाधिक जिम्मेदार गैस ________ है
7. जटरोफा पौधे के बीजों का उपयोग है ________ प्राप्त करने मे ।
8. ग्लोबल वॉर्मिंग के लिए सर्वाधिक जिम्मेदार क्षेत्र ________ है
9. पर्यावरण एवं मानव के बीच घनिष्ट ________ है
10. वन्य जीव संरक्षण कानून वर्ष ________ है

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

लघु उत्तरीय प्रश्न:- खण्ड- घ मिलान प्रश्न:- प्रश्न के स्वभाव के अनुसार सही मिलान करे-

(1)

दिवस		दिनांक
(1) विश्व पर्यावरण दिवस	(A)	24 अक्तूबर
(2) राष्ट्रीय विज्ञान दिवस	(B)	22 अप्रैल
(3) पृथ्वी दिवस	(C)	5 जून
(4) संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस	(D)	28 फ़रवरी

(2)

विटामिन्स		रोग
(1) विटामिन A	(A)	स्कर्वी (सूखा रोग)
(2) विटामिन C	(B)	रुधिर का थक्का न बनना (रुधिर स्कंदन)
(3) विटामिन K	(C)	रतौंधी
(4) विटामिन D	(D)	रिकेट्स

(3)

पर्यावरण आंदोलन		व्यक्ति
(1) चिपको आंदोलन	(A)	पांडुरंग हेगड़े
(2) खेजड़ी आंदोलन	(B)	उत्तराखण्ड की महिलाएं
(3) एप्पिको आंदोलन	(C)	अमृता देवी
(4) मैती आंदोलन	(D)	सुंदर लाल बहुगुणा

(4)

विषय वस्तु		मापक यंत्र
(1) भूकंप	(A)	लैक्टोमीटर
(2) ध्वनि की तीव्रता	(B)	रिक्टर स्केल
(3) दूध की शुद्धता	(C)	डेसीबल
(4) वायु प्रदूषण	(D)	साइक्लोन कलेक्टर

(5)

माध्यम		रोग
(1) वायु द्वारा	(A)	टिटनस
(2) पानी द्वारा	(B)	कोलरा (हैजा)
(3) संपर्क द्वारा	(C)	सिफलिस
(4) घाव द्वारा	(D)	यक्ष्मा (T.B.)

लघु उत्तरीय प्रश्न —— खण्ड (ङ)

1) पर्यावरण शब्द का अर्थ बताइये।
2) प्राकृतिक अपघटक एवं तृतीयक उपभोक्ता में क्या अंतर है?
3) विटामिन C एवं D अमित पदार्थों का वर्गीकरण करें।
4) पर्यावरण सुरक्षा के लिए दो उपाय बताइये।
5) जल चक्र क्रिया को चित्र रूप में दर्शायें।

04/01/2023
Ajay Kumar Singh
Asst. Prof., MCEM Hajipur

MCEM
Maitreya College of Education & Management
Shaping Education
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

उत्तरमाला

खंड (क) बहुविकल्पिय प्रश्न

1.	A	2.	D	3.	D
4.	B	5.	A	6.	C
7.	D	8.	A	9.	C
10.	B	11.	D	12.	B
13.	A	14.	D	15.	A

खंड (ख) सत्य/असत्य

1.	True	2.	False	3.	False
4.	False	5.	True	6.	True
7.	True	8.	True	9.	False
10.	False	11.	True	12.	False
13.	False	14.	True	15.	True

खंड (ग) रिक्त स्थानों की पूर्ति

1.	यौगिक	2.	खड़ा	3.	कम
4.	समताप	5.	16 सितंबर	6.	CO_2
7.	बायो-डिजल	8.	मोटरवाहन	9.	संबंध
10.	1972				

खंड (घ) मिलान प्रश्न

1.	1. (C)	2. (D)	3. (B)	4. (A)
2.	1. (C)	2. (A)	3. (B)	4. (D)
3.	1. (D)	2. (C)	3. (A)	4. (B)
4.	1. (B)	2. (C)	3. (A)	4. (D)
5.	1. (D)	2. (B)	3. (C)	4. (A)

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin@maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

उद्देश्य		ज्ञान स्तर Knowledge Level					बोध स्तर Comprehension Level					प्रयोग स्तर Application Level					सृजनात्मक स्तर Creativity Level					Total
प्रश्नों का स्वरूप →	100 %	22 %					26 %					28 %					24 %					50
पाठ्य वस्तु ↓	भारांक Weightage	बहुविकल्पी य	सत्य/असत्य	रिक्त स्थान पूर्ति	मिलान प्रश्न	लघु उत्तरीय प्रश्न	बहुविकल्पी य	सत्य/असत्य	रिक्त स्थान पूर्ति	मिलान प्रश्न	लघु उत्तरीय प्रश्न	बहुविकल्पी य	सत्य/असत्य	रिक्त स्थान पूर्ति	मिलान प्रश्न	लघु उत्तरीय प्रश्न	बहुविकल्पी य	सत्य/असत्य	रिक्त स्थान पूर्ति	मिलान प्रश्न	लघु उत्तरीय प्रश्न	प्रश्नों का योग
पर्यावरण एवं मानव संबंध	20 %	क-1	ख-5			ङ-1		ख-11 ख-12	ग-9				ख-4					ख-2 ख-8 ख-13				10
पारिस्थितिकी एवं जैव विविधता	16 %		ख-1				क-2	ख-6			ङ-2	क-14				ङ-5		ख-10 ख-14				8
पर्यावरण प्रदूषण एवं संरक्षण	36 %	क-8		ग-10	घ-1		क-4		ग-1 ग-8	घ-5		क-3 क-13		ग-3 ग-7	घ-3 घ-4		क-9 क-10	ख-7 ख-15			ङ-4	18
ग्रीन हाउस ओज़ोन गैस एवं अम्ल वर्षा	14 %			ग-2 ग-4 ग-5					ग-6			क-11 क-12	ख-9									7
मानव पोषण प्रोटीन एवं विटामिन	14 %	क-5						ख-3		घ-2		क-15				ङ-3	क-6 क-7					7
	100 %	3	2	4	1	1	2	4	4	2	1	6	2	2	2	2	4	7			1	50

04/01/2022
Kumar Singh
of., MCEM Hajipur

MCEM

मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट

MAITREYA COLLEGE OF EDUCATION & MANAGEMENT

EPIP CAMPUS, INDUSTRIAL AREA, HAJIPUR- 844101(VAISHALI)

22 अप्रैल, 2019 विश्व पर्यावरण दिवस
पर्यावरण जागरूकता परीक्षण

समय – 30 मिनट

1. ओज़ोन परत वायुमंडल के किस स्तर पर पाया जाता है ?
   A- समताप मंडल (स्ट्रेटोस्फेयर) b- क्षोभ मंडल (ट्रोपोस्फेयर)
   c- मध्य मंडल (मेसोस्फेयर) d- आयन मंडल (आयनोस्फेयर)

2. कौन -सा मंडल रेडियो तरंगों को परावर्तित करता है ?
   a- ओज़ोन मंडल b- समताप मंडल c- परिवर्तन मंडल d-आयन मंडल

3. वायुमंडल मुख्यतः किससे गर्म होता है ?
   a- पृथ्वी के विकिरण द्वारा b- पृथ्वी की गति के घर्षण से,
   c- सूर्य की सीधी किरणों से d-पृथ्वी के अंदर की ऊष्मा से

4. जलवाष्प की मात्रा पर सबसे अधिक प्रभाव किसका पड़ता है ?
   a-तापमान का b- वायु का c- वर्षा का d- उपर्युक्त में से किसी का नहीं

5. जनसंख्या को प्रभावित करने वाला सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक कौन सा है ?
   a-ऐतिहासिक कारक b- जलवायु कारक c-आर्थिक कारक d- राजनीतिक कारक

6. राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार देश के कितने प्रतिशत क्षेत्र पर वनों का विस्तार होना चाहिए ?
   a- 35 प्रतिशत b- 23 प्रतिशत c- 33 प्रतिशत d- 28 प्रतिशत

7. वर्तमान समय में भारत में कुल कितने प्रतिशत भूमि पर वन पाये जाते है ?
   a- 19 प्रतिशत b- 25 प्रतिशत c-20.8 प्रतिशत d-22 प्रतिशत

8. नलकूपों की सर्वाधिक संख्या किस राज्य में पायी जाती है ?
   a- मध्यप्रदेश b-उत्तरप्रदेश c-पंजाब d-हरियाणा

9. किस राज्य में तालाबों द्वारा सिंचित क्षेत्र सार्वधिक है ?
   a- कर्नाटका b- केरल c- मध्यप्रदेश d-तमिलनाडु

10. जैव विविधता के नाश का कारण है ?
   a- जीवों के प्राकृतिक आवास की कमी b-पर्यावरण प्रदूषण
   c- वनों का नाश d-उपर्युक्त सभी

11. सबसे स्थायी पारिस्थितिकी तंत्र है।
   a- वन b-घास के मैदान c-रेगिस्तान d-समुद्री

12. निम्नलिखित में से कौन सा कार्य पेड़ -पौधे का नहीं है ?
a- कार्बन -डाई -आक्साईड का अवशोषण
b- शोर का अवशोषण
c- वायु का प्रदूषण
d- आक्सीजन की विमुक्ति

13. भारत में गिद्धों की कमी का अत्यधिक प्रमुख कारण है |
a- विषाणु संक्रामण
b- जीवाणु संक्रामण
c- जानवरों को दर्द निवारक देना
d- जानवरों को एस्ट्रोजन ऐंजेकशन

14. खाद्य शृंखला (फूड चैन)में मानव है |
a- एक निर्माता
b- केवल प्राथमिक उपभोक्ता
c- केवल द्वितीयक उपभोक्ता
d- प्राथमिक तथा द्वितीयक उपभोक्ता

15. "इको मार्क " उन भारतीय उत्पादों को दिया जाता है जो ....
a- शुद्ध एवं मिलावट रहित हो
b- प्रोटीन-समृद्ध हो
c- पर्यावरण के प्रति मैत्रीपूर्ण हो
d- आर्थिक रूप से व्यवहार्य हो

16. मॉंट्रियल प्रोटोकाल किससे संबन्धित है ?
a- ओज़ोन क्षय
b- परमाणु हथियार
c- लैंड माइंस
d- सागर तट

17. भारत में सर्वाधिक वर्षा दक्षिणी-पश्चिमी मानसून द्वारा होती है | इसकी समय अवधि होती हैं |
a- अप्रैल से अक्टूबर तक
b- मई से जुलाई तक
c- जून से सितंबर तक
d- मार्च से अगस्त तक

18. मलेरिया की दवा कुनैन किस वृक्ष से बनायी जाती है ?
a- सिनकोना
b- वालनट
c- चीर
d- यूकेलिप्टस

19. शुष्क खेती करने के लिए कितनी वर्षा की आवश्यकता होती है ?
a- 25 सेमी
b- 75 सेमी
c- 80 सेमी
d- 50 सेमी

20. पर्यावरण को सर्वाधिक प्रदूषित किया है ?
a- जनसंख्या वृद्धि ने
b- औद्योगीकरण ने
c- नगरीकरण ने
d- प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग ने

परीक्षार्थी का नाम -
रोल नं०

कुल प्राप्त अंक ....

Gender school and society

1. 2011 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार शिशु लिंगानुपात (child sex ratio) क्या है ? (919)
2. "औरत पैदा नहीं होती बना दी जाती है।" किसने कहा ? (सिमोन -दी -बौउवार)
3. 'समान कार्य के लिए समान वेतन' ——————— नारीवादियों की मुख्य मांग है। (उदारवादियों का)
4. पितृसत्ता, महिलाओं की पुरुषों के तहत ——————— मे विश्वास करती हैं। (अधीनता)
5. जैवशारीरिक गुणों के आधार पर लिंगों के मध्य असमानता को न्यायोचित ठहराना ——————— कहा जाता है। (परंपरावादी/ उदारवादी नारीवाद)
6. बिहार बोर्ड के पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त पुरुष केन्द्रित भाषा के दो उदाहरण दीजिये।
7. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना ——————— लड़कियों के शिक्षा के लिए है। (SC /ST /OBC, अति पिछड़ा अल्पसंख्यक समुदाय के बच्चे)
8. सेक्स ——————— है, जबकि जेंडर ——————— संप्रत्यय है। (प्राकृतिक, सामाजिक)
9. महिलाएं एक ——————— समूह नहीं हैं। (संगठित)
10. ——————— नारीवाद का मुख्य मुद्दा महिला मताधिकार था। (उदारवादी (सफरेज))
11. जेंडर पदानुक्रम (hierarchy) का संप्रत्यय ——————— द्वारा दिया गया है।
12. अपने विद्यालय के एक छिपे हुये (हिडेन) पाठ्यक्रम अभ्यास को बताईए जो समाज के जेंडर संबंध को बनाये रखने के लिए प्रायोजित हो। (जैसे -पुरुष एवं महिलाओं के लिए अलग -अलग खेल)
13. बिहार बोर्ड के पाठ्यपुस्तक मे जेंडर पक्षपात का एक उदाहरण लिखें।
14. परिवार के अलावा, एक अन्य जेंडर समाजीकरन की संस्था का नाम लिखो। (धर्म, स्कूल)
15. व्यक्तिगत ही राजनीति है (Personal is Political) यह प्रसिद्ध नारा ——————— ने दिया (उग्रनारीवाद Radical Feminism)
16. भारत में लिंग चयनित गर्भपात का मूल कारण ——————— (लड़के की चाहत / पितृसत्तात्मक व्यवस्था)
17. कक्षा में लड़के और लड़कियों के अलग -अलग बैठने की व्यवस्था ——————— पाठ्यक्रम व्यवहार का उदाहरण है। (हिडेन छिपे हुये पाठ्यक्रम)
18. जेंडर तुल्यता सूचकांक GENDER PARITY INDEX (GPI) की गणना किसी कक्षा स्तर पर कुल ——————— मे लड़कियों की हिस्सेदारी से की जाती है। (लड़कों)
19. तुल्यता (Equity) समानता Equality की पूर्व शर्त है। - सत्य / **असत्य**
20. मर्दानगी एक प्रकार का हक बोध है - सत्य /**असत्य**
21. उदारवादी नारिवाद, उदारवाद (liberalism) की आलोचना है। सत्य /**असत्य**
22. समान कार्य के लिए समान वेतन ——————— नारीवाद की मुख्य मांग थी। (उदारवादी)
23. नारीवाद का पहला आंदोलन किस नाम से जाना जाता है। (उदारवादी नारीवाद (सफरेज नारीवाद))
24. भारत मे पहले ट्रांसजेंडर (Transgender) जज का नाम लिखें। (ज्योति मण्डल) झारखंड
25. सबसे प्रसिद्ध भारतीय महिला गणितज्ञ का नाम बताईए। (लीलावती)
26. गुप्त पाठ्यचर्या (Hidden Curriculum) को किसने गढ़ा। (फिलिप डब्लू जैकसन, 1968)
27. **ओरिजिंस ऑफ पैट्रीयार्की** पुस्तक किसने लिखी है - **एंजेल्स**
28. विद्यालय जेंडर पूर्वाग्रहों को hidden curriculum के माध्यम से आगे बढ़ाते हैं। - **सत्य** /असत्य
29. जेंडर पहचान ——————— के रूप से निर्मित होती है। (सामाजिक पहचान)
30. ——————— के अभाव में समानता नहीं प्राप्त की जा सकती। (Equity तुल्यता)
31. महिला शिक्षा के उपकरणवादी उपागम (Instrumentalist approach) के संबंध में निम्न में से कौन -सा कथन असत्य है ?
   A -महिला शिक्षा छोटे परिवार के लिए है।
   B- महिला शिक्षा जागरूक मातृत्व हेतु।
   C-महिला शिक्षा स्वायत्त, आत्मनिर्भर नागरिकता हेतु।
   D-महिला शिक्षा सामाजिक समरसता हेतु।
32. पाठ्यपुस्तकों में जेंडर पूर्वाग्रह एक वैश्विक घटना है - **सत्य**/असत्य
33. महिला मताधिकार की मांग ——————— नारीवादियों की एक प्रमुख मांग थी। (उदारवादी, सफरेज)
34. स्त्री है ——————— जबकि स्त्रीत्व ——————— मान्यता के आधार पर निर्धारित होता है। (प्राकृतिक, सामाजिक)
35. तुल्यता Equity और समानता Equality समान संप्रत्यय है - सत्य /**असत्य**
36. लड़कियों को [illegible] उपलब्ध कराना शिक्षा में तुल्यता equity / समानता equality सुनिश्चित करने का एक उदाहरण।
37. पितृसत्ता एक ——————— व्यवस्था है जो मानती है कि पुरुष, स्त्रियों से ——————— है।
38. पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त जेंडर पूर्वाग्रहयुक्त भाषा के दो उदाहरण दीजिये।
39. छिपे हुए पाठ्यक्रम व्यवहार का एक उदाहरण दीजिए जो जेंडर रूढ़िवादिता को बढ़ावा देता है।

PPT ONLINE CLASS
Topic:- जानने के सामाजिक-संस्कृतिक परिप्रेक्ष्य की भूमिका:-
Knowing
Social
Cultural
Monika kri 755
You
Ruby
Priyanka
33 others
Monika kri 755
Monika kri 755
34 others

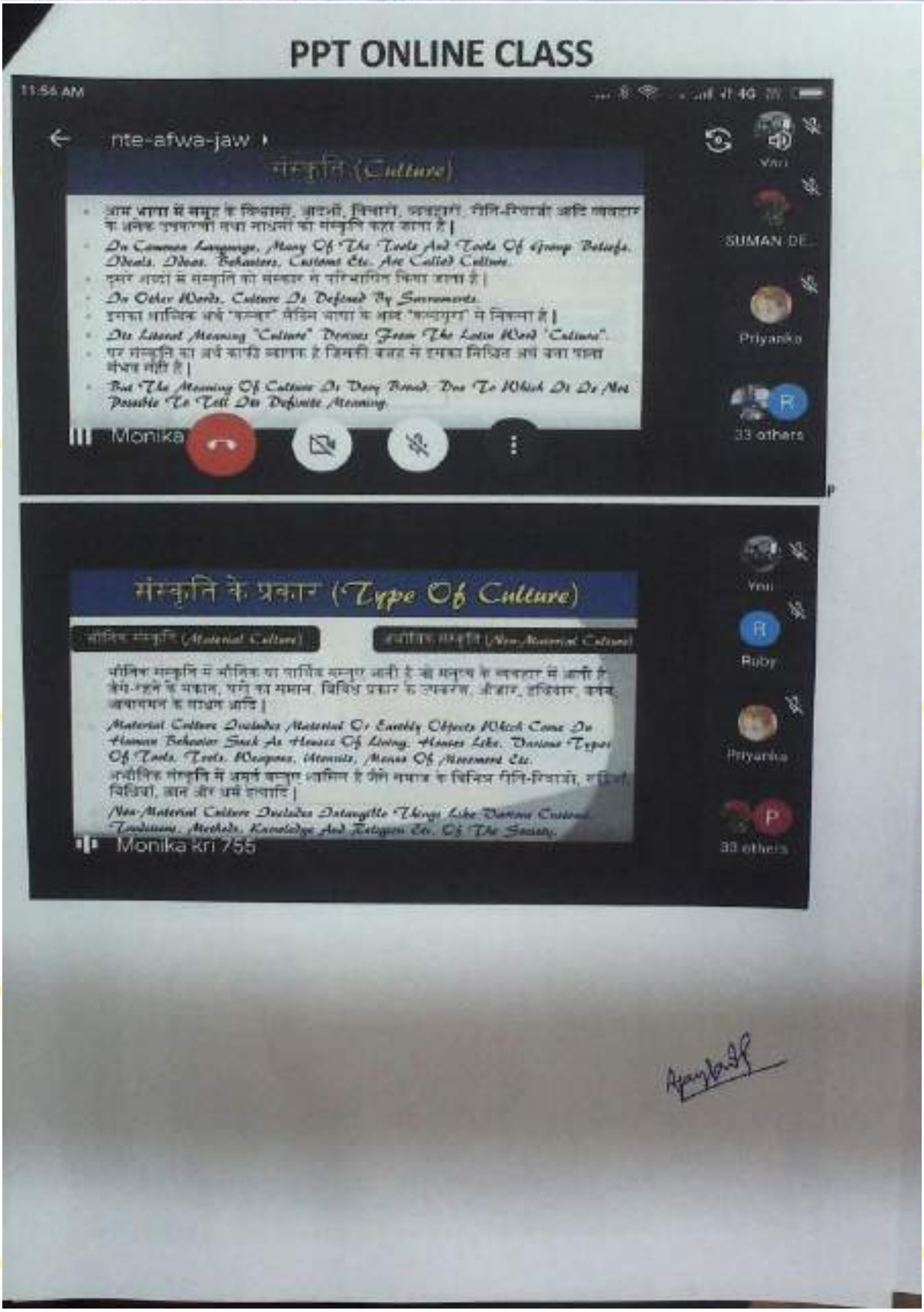
PPT ONLINE CLASS
11:56 AM
nte-afwa-jaw
संस्कृति (Culture)
SUMAN DE...
Priyanka
33 others
Monika
संस्कृति के प्रकार (Type Of Culture)
Ruby
Priyanka
33 others
Monika kri 755

CONCEPT MAPPING

GOOGLE MEET/ONLINE TEACHING

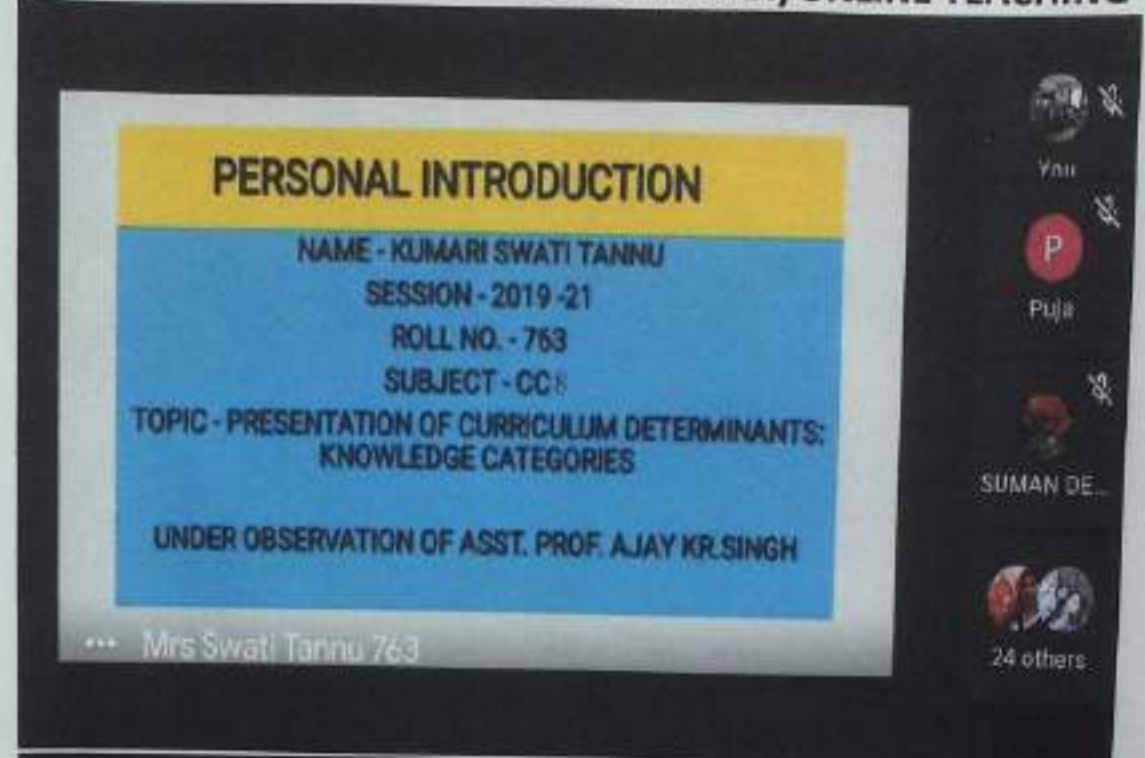

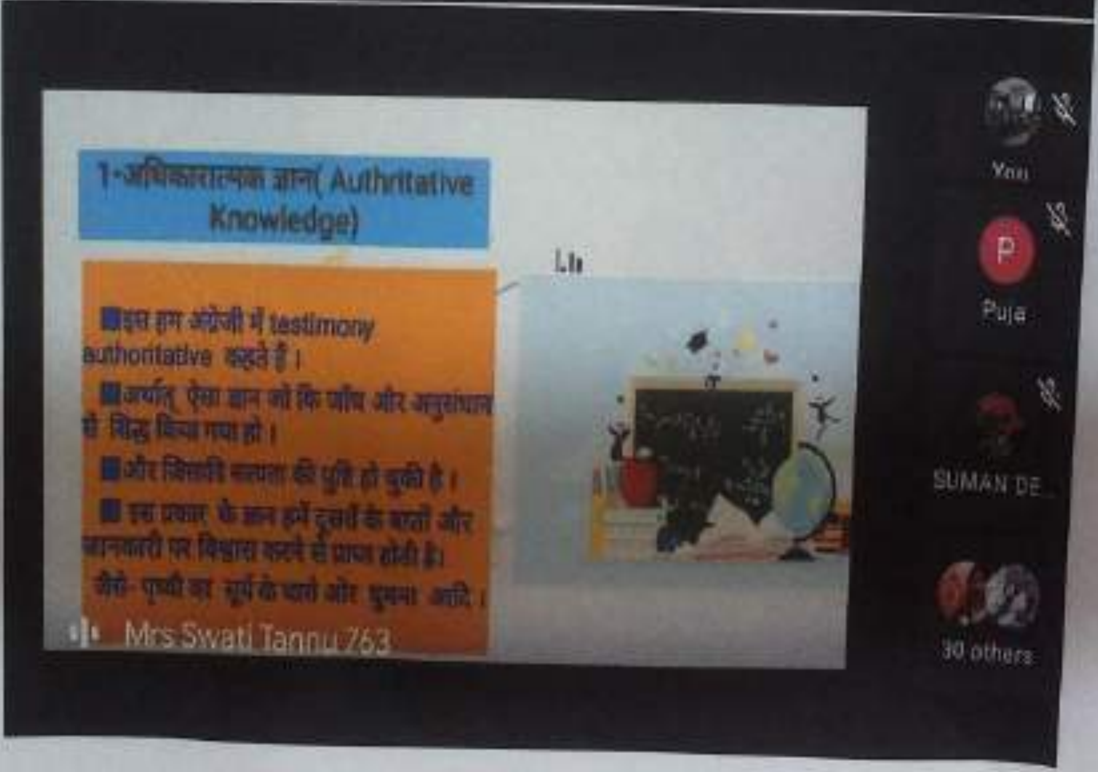

MCEM
Maitreya College of Education & Management
Shaping Education
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

CONCEPT MAPPING
GOOGLE MEET/ONLINE TEACHING
KNOWLEDGE CATEGORIES
Scientific Knowledge
Pragmatic Knowledge
Emperical knowledge
Intuitive Knowledge
Revealed Knowledge
Mrs Swati Tannu 763
You
Puja
SUMAN DE...
27 others
INTUITIVE KNOWLEDGE
32 others

PPT TRHROUGH GOOGLE MEET
M.C.E.M.
College Hajipur
(Vaishali)
Cc=8, Unit=2,
Topic=Curriculum needs & concept
Prasentation by=Dolly kumari
Ajay sir
Dolly kumari , 752
You
Neha
Baby
16 others
5) उद्देश्य की प्राप्ति हेतु।
6) पाठ्य पुस्तकों के निर्माण हेतु।
7) लोकतांत्रिक मुल्यों के विकास हेतु।
8) शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर बनाए हेतु।
9)पाठ्यचर्या में क्रियाओं हेतु।
Dolly kumari , 752
You
Pooja
33 others
पाठ्यचर्या की आवश्यकता एवं महत्व
1) शिक्षा की प्रक्रिया व्यवस्थित रूप से चलाने हेतु
3) शिक्षार्थी की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु
Dolly kumari , 752
You
Neha
24 others

PPT TRHROUGH GOOGLE MEET

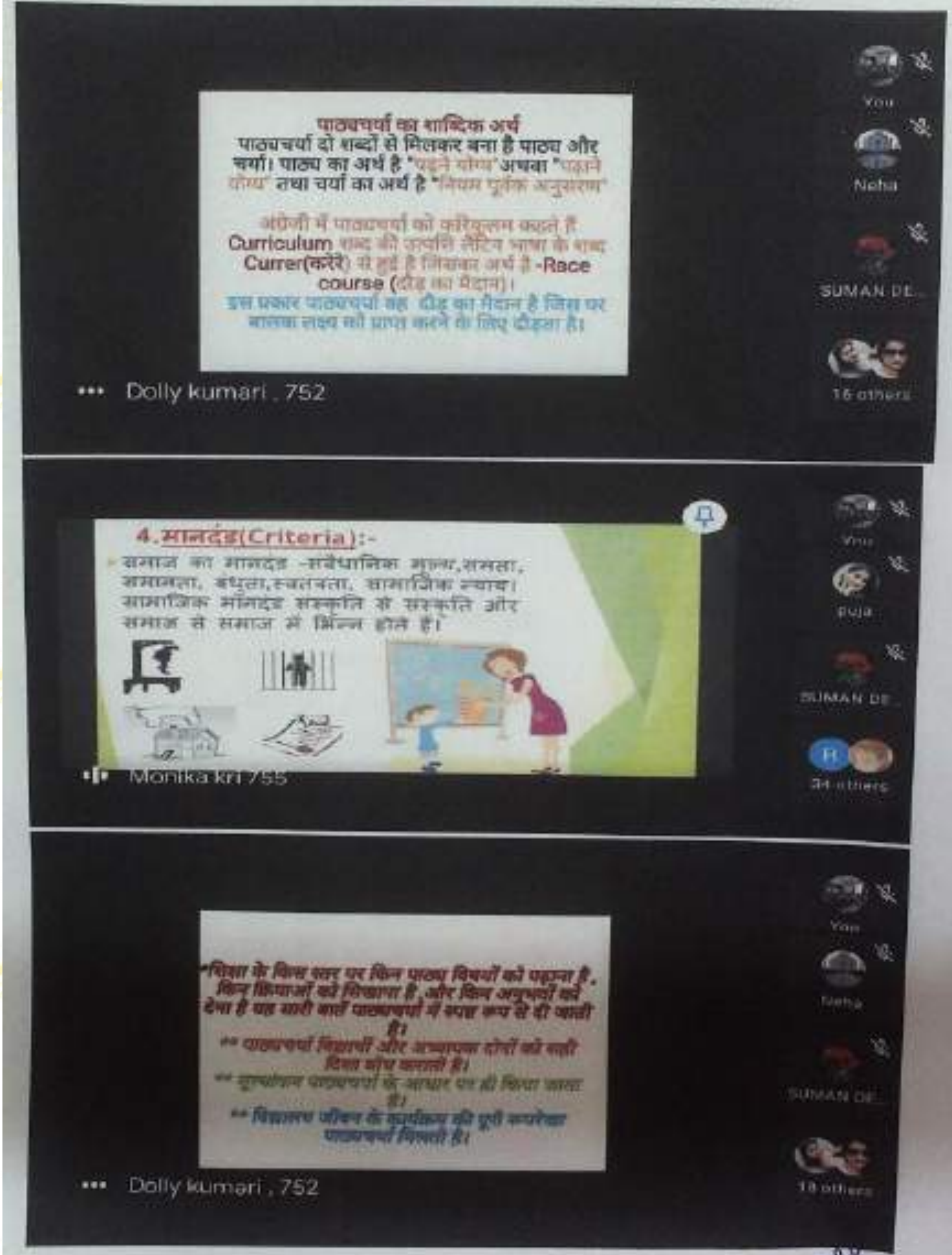

दिनांक :-

आंतरिक मूल्यांकन संबंधी स्व-मूल्यांकन प्रपत्र

नाम: ____________________

क्रमांक: ____________

सत्र: ____________

प्रशिक्षुओं से अपेक्षा है कि वे इस प्रपत्र को स्वयं भरें और ____________ तक अवश्य जमा करा दें। यह प्रपत्र आपको अपने-आप के मूल्यांकन का अवसर देता है।

1. आंतरिक मूल्यांकन हेतु प्रत्येक विषय केन्द्रित कार्य, Content test के लिए कुल 70 अंक एवं स्वयं की समझ के निर्धारित 50 अंकों अर्थात् कुल 120 अंकों का आंतरिक मूल्यांकन निम्न तालिका के अनुसार किया जायेगा -

क्र.सं.	निर्धारित विषय	निर्धारित कुल अंक	कार्य विवरण	स्व मूल्यांकन
1	Assignment (दत्तकार्य) प्रत्येक विषय में अलग-अलग CC- 8, CC-9 में 4-4 प्रश्न एवं PC-7B, CC-10, OC-11, EPC-4 में न्यूनतम दो-दो प्रश्न)	20 अंक जिसमें CC-8, CC-9 5 X 2= 10 अंक PC-7B, CC-10, OC-11 के 2.5X4=10 अंक	संस्थान द्वारा उपलब्ध कराये गये Assignment Copy में लिखकर जमा कराना है।	
2	आंतरिक परीक्षा जून, 2018	कुल 20 अंक जिसमें CC-8, CC-9 के 5X2 = 10 अंक PC-7B, CC-10, OC-11, EPC- 4 के 2.5X4= 10 अंक	जून, 2018 में लिए गए आंतरिक परीक्षा के विषयवार प्राप्तांक के आधार पर आंतरिक मूल्यांकन का अंक दिया जायेगा।	
3	सदन की गतिविधियाँ • डी.एस. कोठारी हाउस • गिजु भाई हाउस • जे. कृष्णमूर्ति हाउस • केनी- मार्डेक हाउस	5 गतिविधियों के लिए 5X4 अंक = 20 अंक सदनवार प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ को वार्षिक परिणाम के आधार पर।	गतिविधि- 1. साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम (4 अंक) 2. हाउस-बोर्ड/बुलेटिन-बोर्ड डिस्प्ले (4 अंक) 3. समाचार-पत्र, वाल-मैगजीन एवं रिपोर्ट प्रकाशन (5 अंक) 4. योग एवं खेलकूद (4 अंक) 5. संस्थान की साफ-सफाई एवं स्वच्छता (4 अंक)	
4	वर्ग कक्ष में उपस्थिति, सहभागिता एवं व्यवहार	6 विषयX4 अंक = 24 अंक	पूरे शैक्षिक सत्र में संस्थान में व्यक्तिगत रूप से वर्ग कक्ष उपस्थिति, वर्ग कक्ष में सहभागिता एवं व्यक्तिगत व्यवहार के आधार पर प्रत्येक विषय (6 विषय X5 अंक) हेतु आंतरिक मूल्यांकन किया जायेगा।	
5	सह-शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता	20 अंक	संस्थान में नियमित रूप से मनाये जाने वाले त्योहार एवं समय-समय पर होने वाली विविध सह-शैक्षिक गतिविधियों में व्यक्तिगत उपस्थिति एवं सहभागिता के आधार पर कुल 20 अंक में से अंक दिया जायेगा।	
6	• पुस्तकालय उपयोग • चेतना सत्र • कतरन पुस्तिका (Scrap Book) • फोटोग्राफी एवं वीडियो • पर्व-त्योहारों पर किये गए प्रदत्त कार्य	10 अंक	गतिविधि-I. नियमित रूप से पुस्तकालय का उपयोग करना। (3 अंक) गतिविधि-II. चेतना सत्र में नियमित उपस्थिति एवं सहभागिता। (4 अंक) गतिविधि-III. संस्थान के कार्यक्रम, पर्व-त्योहार एवं शिक्षण-अभ्यास के समय की गतिविधि की फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी। (3 अंक)	

MCEM
मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट
MAITREYA COLLEGE OF EDUCATION & MANAGEMENT
EPIP CAMPUS, INDUSTRIAL AREA, HAJIPUR 844101(VAISHALI)

			गतिविधि-iv. पर्व-त्योहारों पर दिये गए प्रदत्त कार्यों को संस्थान को उपलब्ध कराना। (यथा लोकगीत, लोककथा का संकलन) 3 अंक गतिविधि-v. कतरन पुस्तिका बनाकर जमा करना। (3 अंक)	

- उपरोक्त सभी गतिविधियों में व्यक्तिगत भागीदारी के आधार पर अंक दिये जाएंगे।

2. आंतरिक मूल्यांकन हेतु बी.एड. प्रथम वर्ष के 'स्कूल संपर्क कार्यक्रम' एवं द्वितीय वर्ष के 'स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रम' के अंतर्गत स्कूल डायरी, कक्षा अवलोकन (सहपाठी अवलोकन), विद्यालय अवलोकन, प्रशिक्षु-विद्यार्थी संवाद, कृत्रिम आचार-विचार, प्रयोजना कार्य, क्रियात्मक अनुसंधान, व्यक्तिगत अध्ययन (Case Study) सीखने की योजना (Learning Plan), शिक्षण अभ्यास (Lesson Plan) व शिक्षण अभ्यास (Learning Plan) मनोवैज्ञानिक परीक्षण, सामुदायिक कार्य, शैक्षिक परिभ्रमण, मार्बलिंग Art & Craft / Computer, योग एवं खेल-कूद, स्कूल की साफ-सफाई एवं स्वच्छता, स्कूल के कार्यक्रमों, पर्व-त्योहार गतिविधियों एवं इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान शिक्षण-अभ्यास की किये गये फोटोग्राफी एवं विडियोग्राफी हेतु निर्धारित कुल 200 अंकों का आंतरिक मूल्यांकन निम्न तालिका के अनुसार किया जायेगा।

क्र.सं.	निर्धारित विषय	निर्धारित कुल अंक	कार्य विवरण	स्व-मूल्यांकन
1.	शिक्षण डायरी(स्कूल डायरी) (विद्यालय अवलोकन 25 की रिपोर्टिंग)	प्रथम वर्ष- 'स्कूल संपर्क कार्यक्रम'-10 अंक द्वितीय वर्ष- 'स्कूल ईन्टर्नशिप कार्यक्रम'- 15 अंक	प्रशिक्षु-शिक्षक शिक्षण डायरी में प्रतिदिन के अपने स्कूल अनुभवों को लिखेंगे। विद्यालय में अपने उपस्थिति में घटित संपूर्ण घटनाओं जैसे- चेतना सत्र, कक्षा शिक्षण एवं अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों को विस्तृत रूप से लिखा जायेगा। आपकी राय एवं प्रतिदिन की समीक्षा भी लिखी जाएगी साथ ही आवश्यक साक्ष्य प्रस्तुत किए जायेंगे।	
2.	कक्षा अवलोकन शिक्षक-शिक्षण अवलोकन एवं सहपाठी शिक्षण अवलोकन (25 अंक)	प्रथम वर्ष – 'विद्यालय संपर्क कार्यक्रम' (10 अंक) द्वितीय वर्ष- 'स्कूल ईन्टर्नशिप कार्यक्रम'- (15 अंक)	कक्षा शिक्षण के दौरान प्रशिक्षु, नियमित शिक्षकों एवं अपने साथी प्रशिक्षुओं में से किन्हीं (प्रथम वर्ष में एक, द्वितीय वर्ष में दो) दो की कक्षाओं एवं उनकी गतिविधियों का प्रतिदिन अवलोकन करेंगे। अवलोकन के बाद अपने सुझाव दिये जाएंगे तथा अवलोकन प्रपत्र पर कक्षा शिक्षण की समाप्ति पर अवलोकित प्रशिक्षु के हस्ताक्षर लिए जायेंगे। अवलोकन कार्य, अवलोकनकर्ता के अपने शिक्षण कौशलों के विकास में मदद करेगा। वहीं अवलोकित प्रशिक्षु हेतु अपने शिक्षण में सफलता-असफलता को जानने एवं सुधार करने में मदद करेगा।	
3	सह-शैक्षिक गतिविधियाँ	25 अंक	निम्न बिंदुओं के आधार पर आंतरिक मूल्यांकन किया जाना है- प्रशिक्षु स्कूल में विभिन्न प्रकार की सह-शैक्षिक गतिविधियों का आयोजन एवं सहभागिता करेगा जिसके अंतर्गत, चेतना सत्र, शैक्षिक परिभ्रमण, सामुदायिक कार्य (जन-जागरूकता रैली, सफाई अभियान, पर्यावरण जागरूकता एवं मार्बलिंग) करेंगे। स्कूल से वंचित बच्चों को स्कूल आने हेतु प्रभात फेरी लगाकर प्रेरित करना। विद्यालय उत्सव हेतु विद्यालय, शिक्षा समिति के सहयोग से कार्य करना। स्कूल में दोपहर भोजन वितरण में मदद करना। योग एवं खेलकूद का आयोजन। विभिन्न राज्य एवं राष्ट्रीय तिथियों का आयोजन।	
4	प्रशिक्षु विद्यार्थी संवाद (कुल 20 अंक)	प्रथम वर्ष में 24 संवाद =10 अंक द्वितीय वर्ष 75 संवाद = 10 अंक	स्कूल के प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत विभिन्नता को देखते हुए यह आवश्यक है कि प्रशिक्षु-शिक्षक इन विभिन्नताओं का पता लगाएँ एवं उन्हें स्वयं को समझने में मदद करें। इस कार्य हेतु प्रशिक्षु-शिक्षक प्रतिदिन एक विद्यार्थी से सौहार्दपूर्ण ढंग से उसकी रुचि, जिज्ञासा, समाज, परिवार, उसका स्कूल, उसकी मित्र मंडली, पैतृक-व्यवसाय इत्यादि पर बातचीत करेंगे, आवश्यक सलाह देंगे, प्रगति का निरीक्षण करेंगे।	
5	व्यक्तिक अध्ययन विवरण (Case Study)	(कुल- 05 अंक) 'विद्यालय संपर्क कार्यक्रम' (प्रथम वर्ष)	प्रशिक्षु व्यक्तिक इतिहास (Case Study) प्रपत्र को विद्यालय के किसी एक विद्यार्थी द्वारा प्रदत्त सूचनाओं के आधार पर भरेंगे। जिसके तहत वे नियमित रूप से एक विद्यार्थी विशेष का अध्ययन	

MCEM

मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट
MAITREYA COLLEGE OF EDUCATION & MANAGEMENT
EPIP CAMPUS, INDUSTRIAL AREA, HAJIPUR- 844101(VAISHALI)

			करेंगे। जिसमें उनकी व्यक्तिगत जानकारियों के अलावा उनके समस्याओं का अध्ययन करेंगे और समय-समय पर यथा संभव समस्याओं से निपटने के लिए चयनित शिक्षार्थी को मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। अवलोकित शिक्षार्थी के संबंध में प्राप्त परिणाम पर अपनी समीक्षात्मक टिप्पणी भी लिखेंगे।
6	मूल्यांकन (ब्लू प्रिंट और सम्प्राप्ति परिक्षण)	20 अंक	प्रोजेक्ट वर्क (Project Work) के अंतर्गत प्रशिक्षु-शिक्षक विद्यालयों में अपने विषय का शिक्षण अधिगम योजना (Laming Plan) एवं पाठ योजना (Lesson Plan) के माध्यम से करेंगे तथा समय-समय पर अपनी कक्षा के संबंधित विषय की परीक्षा भी आयोजित करेंगे जिसके लिए प्रश्न पत्र का निर्माण (जिसमें 50 प्रश्नों का ब्लू प्रिंट आधारित) एवं उनका मूल्यांकन भी करेंगे। यह शिक्षार्थियों का उपलब्धि परिक्षण कहलाएगा। प्रशिक्षु-शिक्षक इसी उपलब्धि परिक्षण(Achievement Test) के माध्यम से ब्लू प्रिंट का निर्माण करेंगे।
7	क्रियात्मक अनुसंधान (Action Research)	20 अंक	प्रशिक्षु क्रियात्मक-अनुसंधान (Action Research) के अंतर्गत अपने द्वारा शिक्षण में कक्षा प्रबंधन में महसूस की गई किसी समस्या के वैज्ञानिक समाधान खोजने का प्रयास करेंगे जिसको अपने कॉपी में लिखेंगे। यह कार्य प्रशिक्षु को कक्षा, शिक्षण, निरीक्षण, प्रशासन एवं निर्देशन में आवश्यक गुणात्मक सुधार की क्षमता प्रदान करेगा। शिक्षक छात्र की व्यक्तिगत, सामाजिक, सांवेगिक, शैक्षिक व्यावसायिक एवं कक्षागत समस्याओं को हल करने में मदद कर सकने की क्षमता अर्जित कर सकेंगे।
8	सीखने की योजना	कुल अंक- 25	प्रशिक्षु प्रतिदिन एक अधिगम योजना (Learning Plan) का निर्माण करेंगे। पर्यवेक्षक द्वारा जाँच के उपरांत अपनी निर्धारित कक्षा में शिक्षण कार्य करेंगे। आवश्यक विधि, प्रविधि एवं शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) का प्रयोग करेंगे। यह कार्य प्रशिक्षु-शिक्षक को कक्षा-प्रबंधन, छात्र-सहभागिता बढ़ाने, छात्रों को स्वयं से सीखने की आदत का विकास करने जैसे गुणों को देखने एवं समझने का अवसर प्रदान करेगा। इस प्रकार 30 सीखने की योजना का निर्माण करेंगे।
9	पाठ-योजना	कुल अंक- 25	प्रशिक्षु सीखने की योजना के उपरांत 30 पाठ योजना (Lesson Plan) का (प्रतिदिन एक पाठ-योजना) का निर्माण करेंगे। संबंधित विषय प्राध्यापक से जाँच के उपरांत कक्षाओं में उनका शिक्षण करेंगे। विधि/प्रविधि एवं शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) का भी प्रयोग करेंगे।
10	नैतिक-संहिता दृष्टिगत	10 अंक	प्रशिक्षु शिक्षक पूरे इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान शिक्षण व्यवसाय संबंधी आचार संहिता का निर्माण करेंगे, जिसके अंतर्गत प्रशिक्षु-कक्षा अध्यापन संबंधी, परीक्षा संबंधी संहिता, सामान्य आचार संहिता, छात्रों के व्यवहार की संहिता, साथियों से व्यवहार के संहिता, अभिभावकों से व्यवहार की संहिता, व्यावसायिक अभिवृद्धि संहिता, विद्यालय कर्मचारियों के साथ व्यवहार की संहिता को ध्यान रखा जाएगा।

Ajay Kumar Singh
15/10/2022
Ajay Kumar Singh
Asst. Prof., MCEM, Hajipur

DR. GYANDEO MANI TRIPATHI
15.10.2022
PRINCIPAL
MAITREYA COLLEGE OF EDUCATION
MANAGEMENT HAJIPUR, BIHAR

MCEM

मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट
MAITREYA COLLEGE OF EDUCATION & MANAGEMENT
EPIP CAMPUS, INDUSTRIAL AREA, HAJIPUR- 844101(VAISHALI)

Assessment Tool

B.Ed. Session..............................

DAILY CLASS REPORT

Name of the Unit: ______________________

Name of the Topic: ______________________

Date: __________

Period: __________

Teaching Points/ Methodology/ Strategies:	
Question asked by students:	
Modification/Innovation (If any)	
Learning Outcome	

CC-6 Gender, School and Society

SINGNATURE & SEAL

3. Effective use of social media/learning apps/adaptive devices for learning

PPT ONLINE CLASS

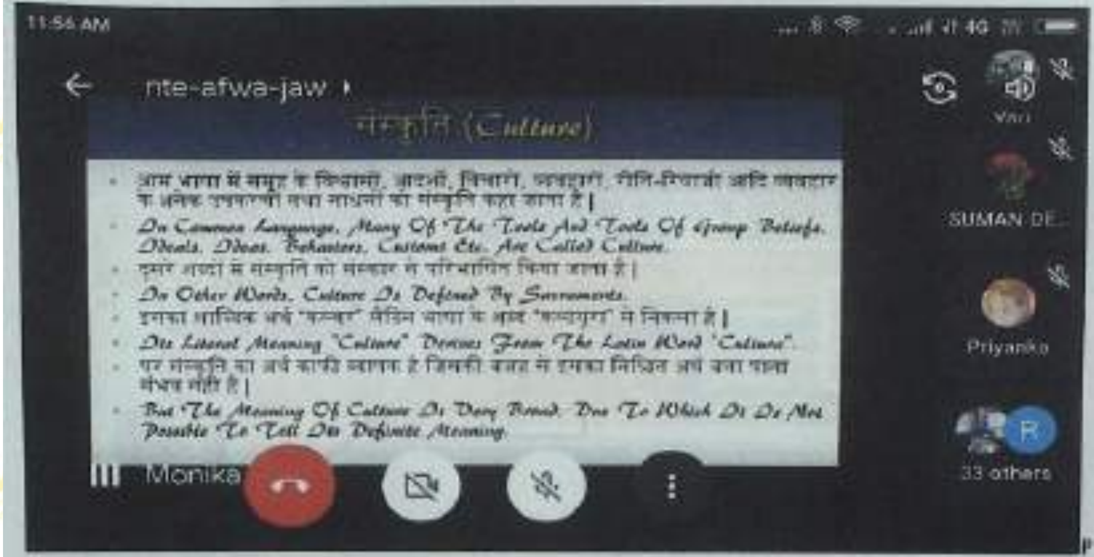

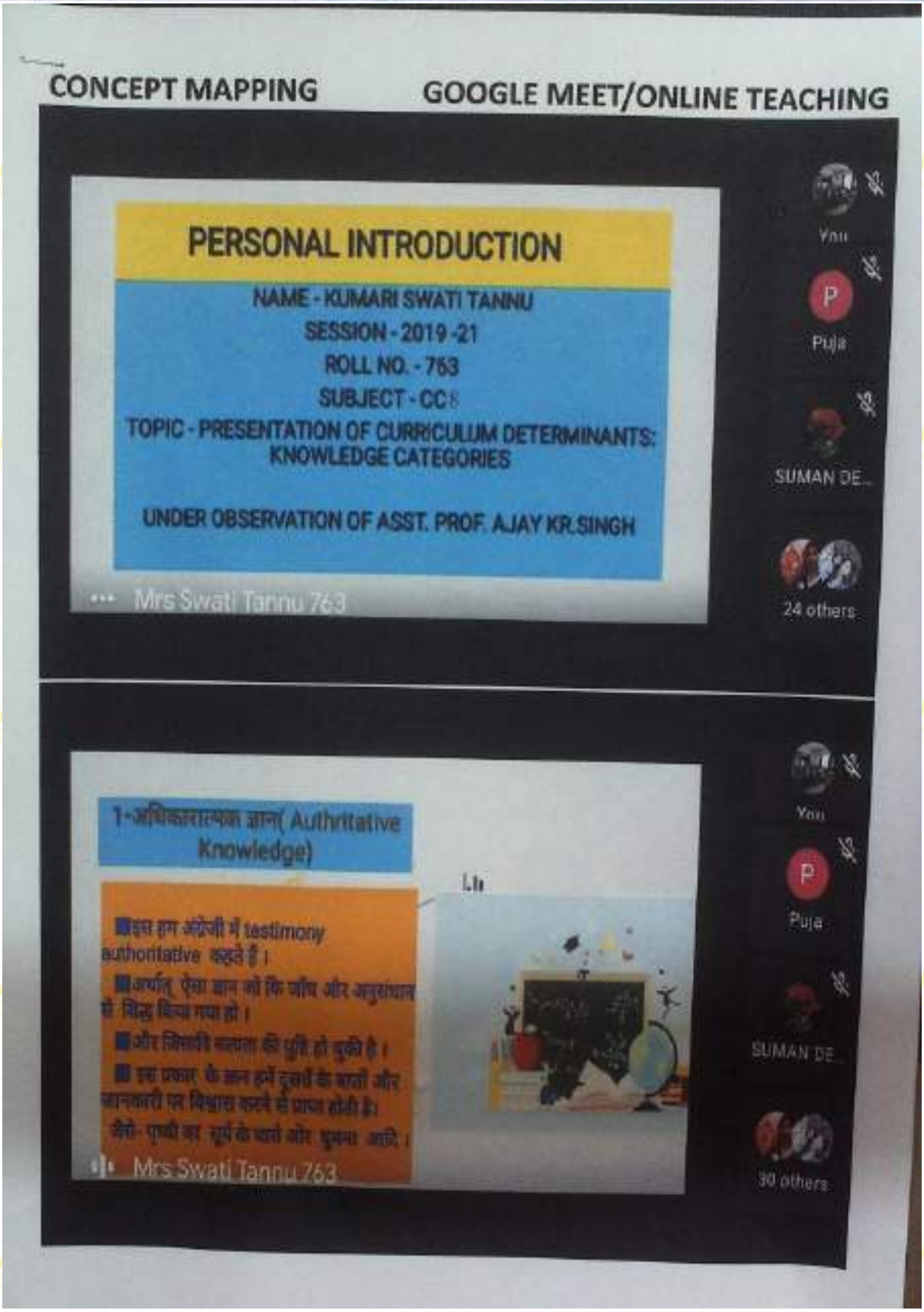
CONCEPT MAPPING
GOOGLE MEET/ONLINE TEACHING
PERSONAL INTRODUCTION
NAME - KUMARI SWATI TANNU
SESSION - 2019 -21
ROLL NO. - 763
SUBJECT - CC
TOPIC - PRESENTATION OF CURRICULUM DETERMINANTS: KNOWLEDGE CATEGORIES
UNDER OBSERVATION OF ASST. PROF. AJAY KR.SINGH
Mrs Swati Tannu 763
You
Puja
SUMAN DE...
24 others
1-अधिकारात्मक ज्ञान(Authritative Knowledge)
इस हम अंग्रेजी में testimony authoritative कहते हैं।
अर्थात् ऐसा ज्ञान जो कि जाँच और अनुसंधान से सिद्ध किया गया हो।
और जिसकी सत्यता की पुष्टि हो चुकी है।
इस प्रकार के ज्ञान हमें दूसरों के बातों और जानकारी पर विश्वास करने से प्राप्त होती है।
जैसे- पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर घूमना आदि।
Mrs Swati Tannu 763
You
Puja
SUMAN DE...
30 others

MCEM
Maitreya College of Education & Management
Shaping Education
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

CONCEPT MAPPING
GOOGLE MEET/ONLINE TEACHING
KNOWLEDGE CATEGORIES
Scientific Knowledge
Pragmatic Knowledge
Emperical knowledge
Intuitive Knowledge
श्रुति ज्ञान
Revealed Knowledge
Mrs Swati Tannu 763
You
Puja
SUMAN DE...
27 others
6. अन्तः प्रज्ञा अथवा सहजबोध ज्ञान
INTUITIVE KNOWLEDGE
32 others

MCEM
Maitreya College of Education & Management
Shaping Education
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

PPT TRHROUGH GOOGLE MEET

MCEM
Maitreya College of Education & Management
Shaping Education
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin@maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

4. Identifying and selecting/ developing online learning resources

Swati Mishra
Asst. Professor, M.C.E.M

PEDAGOGY OF COMMERCE

UNIT-1- MEANING , NATURE, NEED AND SCOPE OF COMMERCE EDUCATION:-

Commerce as a subject in school is important in every sense especially when it comes to educate pupils about various economic activities in day to day life. Mostly what it is been observed that we all have an understanding of science , arts in school level but when it comes to commerce it is first introduced in higher secondary level only. Close insights of different aspect of economic activities are given through commerce education. Commerce is such a subject which deals with all the activities concerned with business. It includes all those activities that help the producer of the product to send his goods in the hands of the customers through various channels. Commercial activities are as old as the history of humankind. Basically, the main purpose of commerce is to remove all the barriers of goods distribution process. Commerce education helps pupils to understand all those activities which directly or indirectly facilitate that exchange. Commerce helps in dealing with the consumption and allocations of total production .It not only explains the reason behind economic activity which we come across in our day to day lives but also provides depth in understanding as how to the goods and services produced are distributed among the various people for consumption, through price of market mechanism. It explains the conditions of efficiency in consumption and production. It also helps in understanding the factors which are responsible for the departure from the efficiency or economic optimum. Commerce education helps people to suggest policies to promote economic efficiency and welfare of the people.

According to **JAMES STEPHENSON, "Commerce is an organized system for the exchange of goods between the members of the industrial world".** Commerce education always helps in understanding the efforts which tries its best to satisfy increasing individual human wants. Standard of living refers to quality of life enjoyed by the members of a society. When man consumes more products his standard of living improves. To consume a variety of goods he must be able to secure them first. Commerce helps us to get what we want at right time, right place and at the right price and thus helps in improving our standard of living .Commerce also links producers and consumers from each other. Commerce education is the sum total of all those processes, which are engaged in the removal of hindrance of persons, place and time in the exchange of the commodities. Every

human being is engaged in some kind of activity. These activities are undertaken with some motive. When the object is to create wealth for satisfying human needs, these are categorized as economic motive i.e., to satisfy social, religious, cultural or sentimental requirements ,these are called non-economic activities. The motivating force for doing some work is to satisfy human wants. Human wants are unlimited and go on multiplying. The resources to satisfy the needs are limited. The use of scarce resources for satisfying human wants is very important. The allocation of available resources is done in such a way that optimum satisfaction is achieved. The production of gods and services and making them available to consumers is the essence of economic activities. The distribution of goods and services from producers to the ultimate users is facilitated by commerce. Commerce refers to all those activities which are necessary to bring goods and services from the place of their origin to the place of their consumption .Commerce deals with only the trading part of commerce and ignoring many other activities known as aids to trade which are also very important. Commerce comprises a group of specialized activities which together from an essential parts of the process of production. Commerce is the sum total of all those processes , which are engaged in the removal of hindrance of various things which may come in the course of exchange of commodities.

Commerce education has two main objectives- to educate for commercial purpose and about business, trade and commerce. It is generally believed that business education, in the first place, should prepare pupils for entry-level employment in the business world- education for business. However, in this syllabus, emphasis is placed on the objective of education about business. It is concerned with the area of knowledge and competencies needed by everyone; the knowledge, skills, abilities, understanding, and attitudes that enable pupils to become worthy human beings and effective members of the business community.

Nature of Commerce Education:-

Commerce is considered to be a part of business. It is that activity of business which is concerned with the exchange of goods and services. Commerce education have some distinct nature too .Some of them are as follows:-

1-Economic activities:-Economy of any country is said to be backbone of any country. Trade and commerce should be flourished properly for smooth development of any country. Prosperity of any country depends upon its financial outreach to various nation too. Commerce is totally related to economic activities only and education related to commerce gives an insight of the commercial and related activities only. Only and only economic activities are studied in this.

2-Exchange of goods and services:-For the purpose of profit, exchange of goods and services are done. Various activities related to trade, finance and related activities are performed. Exchange of services are also important as it gives rise to exchange.

3-Earning motive:- Earning money is also a nature of commerce education. Motive of earning money is biggest motive for this. Becoming economical independent is the objective of any individual after getting proper education and commerce education helps to earn early in life and this earning motive helps a lot in commerce education.

4-Creation of utility:-Creation of utility is one of the most prominent nature of commerce education. It not only helps in creation of various utility but also helps in utilization .It is very important aspect of commerce education.

5-Regularity of transactions:-Transactions means giving and taking session related to any commodities. Regularity of transaction for smooth functioning of economic activities are very important. So, it is important to understand the regularity of transaction to understand the nature of commerce education.

6-Profit maximization and maximum utilization of minimum resources:- Profit maximization is the ultimate goal of any person. Minimum resources should be exploited to its maximum capacity. Knowledge of values helps the teacher to avoid aimlessness in teaching value is the source of aim and vice-versa. One aims at a thing because one values it. When we teach commerce in the light of its aims, we shall realise its values. An activity becomes purposeful when it is pursued with certain aims and objectives. Aim helps us to know what the outcome of an activity would be. The aim directs the activity. It enables us to decide the methods, devices and contents of the subject to be studied. The teacher should keep in view the aims while teaching the subject.

AIMS AND OBJECTIVES OF TEACHING COMMERCE:- The general aim of the course in Commerce Education is to present a balanced picture of the world of business. The course provides a critical survey not only of the theoretical and practical aspects of the managerial functions within firms but also of the integration and synthesis of these functions within the complex environmental settings that they operate, with a special emphasis on local needs and interests. It should also seek to develop in pupils a capacity for dealing with the diverse business problems, a capacity which will enable them to make sensible decisions in their subsequent life. Throughout the course, pupils are trained to think effectively about business as a whole and to appreciate the interdependence of the various branches of business activities. Some of the aims and objectives of teaching commerce education are as follows:-

1. To provide pupils with an understanding of the nature of commercial activities and the environments within which they function.

2. To provide pupils with a knowledge of the theoretical and practical aspects of the operation of the various types of business organizations.
3. To develop in pupils an understanding of the role of business activities in the modern world.
4. To develop in pupils an awareness of the changing and integrated nature of business problems and an ability to explore and deal with these problems.
5. To develop in pupils the skill of analysis, synthesis and evaluation in the context of business decisions.
6. To develop in pupils the competencies and attitudes in playing the various roles in the business world.

Objectives are the specific and precise behavioural outcome of teaching a particular topic in commerce. The objectives of a topic in commerce help in realising some general aim of teaching commerce. The characteristics of a good objective are that it should be specific and precise and it should be attainable. Commerce education forms a part of education of the child. According to John Dewey, "Education is not a preparation of life, but life itself. School is a miniature society, facing problems, similar to those faced in life. The basic purpose of school is to train pupils in cooperative and naturally helpful living. The child is to share the resources of the society and make his own contribution to the maintenance and development of that society". According to Mahatma Gandhi, "Man is neither mere intellect nor the gross animal body, nor the heart nor soul alone. A proper and harmonious combination of all the three is required for making the whole men and it constitutes the true economics of education". Further "A perfect well balanced all round education is one in which the intellect, the body and the spirit have all full play and develop together into a natural harmonious whole". Commerce education is to be imparted keeping in view the above ingredients of Education.

It comprehends even the indirect effect produced on character and on human faculties, by things of which the direct purposes are quite different, by laws, by forms of government, by the industrial arts, by modes of social life; may even by physical facts not dependent on human will, soil and local position. Whatever helps to shape the human beings to make the individual what he is, or hinder him for what he is, is not a part of his education. The following criterion is used to select the aims and objectives of teaching commerce:

(I) This knowledge should help the pupil in his daily life.
(II) It should be related to the materials with which the pupil is familiar and should not be based on obsolete devices and ideas.
(III) It should make pupil fit for society.
(IV) It must provide him some practical experiences which form a part of his learning process.

(V) It should inculcate a commercial temper in the student.

BLOOMS TAXONOMY OF EDUCATIONAL OBJECTIVES:- The word taxonomy derived from the Greek word 'taxis' which means systematic classification. Prof. Benjamin S. Bloom and his associate, University of Chicago developed and classified the domains of educational objectives. Bloom (1956) presented his taxonomy related to cognitive domain giving emphasis to the hierarchy of cognitive process in attaining knowledge and development of thinking. They described the hierarchical development of the three domains of the learner though instruction. This classification objective is known as Blooms taxonomy of educational objectives.

Classification of Blooms taxonomy:-

1. **Cognitive domain- Knowledge field.**
2. **Affective domain- Feeling field.**
3. **Psychomotor domain- Doing field.**

Bloom's taxonomy of objectives is a classification of instructional objectives in a hierarchy. According to it specific objective, have been classified into the following three categories;

(i) Cognitive domain objective.
(ii) Affective domain objectives.
(iii) Psychomotor domain objectives.

Cognitive domain objectives include knowledge, understanding, applications, analysis, synthesis and evaluation. The **Affective domain objectives** include the appreciations, values, attitudes, interests and feelings. The **Psychomotor domain objectives** include skills. Every educational activity should be planned to develop all this domain of the learner. Hence these three domains are mutually interrelated and interdependent also.

MCEM
Maitreya College of Education & Management
Shaping Education
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

प्रिया सिंह
सहायक प्राध्यापिका
MCEM, हाजीपुर

इकाई- IV आंकलन एवं मूल्यांकन के मुद्दे , संदर्भ एवं प्रवृत्तियाँ
(Issues, concerns And Trends in Assessment And Evaluation)
वर्तमान अभ्यास
इकाई परीक्षा (Unit Test)

हम जानते है कि शिक्षण-अधिगम को आसान बनाने के लिए किसी एक विशेष कक्षा के प्रत्येक विषय को कुछ इकाइयों या विषयवस्तुओं में विभाजित करते है। प्रत्येक इकाई अंतरबंधित अवधारणाओं से बनी होती है। यद्यपि विभिन्न इकाइयों की अवधारणाएँ एक दूसरे से संबन्धित होती है फिर भी सुविधा के लिए प्रत्येक इकाई को स्वतंत्र माना जाता है।एक इकाई के शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के बाद आपको यह जानने की आवश्यकता है कि प्रत्येक विद्यार्थी ने उस इकाई की अवधारणाओं को किस स्तर तक ग्रहण किया है। आपको यह जानने के लिए विस्तृत और लंबे परीक्षणों की शायद आवश्यकता न हो। आपको आवश्यकता है तो एक छोटे परीक्षण कि जिसे इकाई परीक्षण कहते है और जो आपकी उद्देश्य प्राप्ति में सहायक हो सकता है।

व्यावहारिक के आधार पर इकाई परीक्षण की योजना, विषयवस्तु, वांछित अधिगम निष्कर्ष और उपलब्ध समय (लगभग 30 मिनट)को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है।यदि कोई बहुत ही छोटा इकाई है तो 2-3 इकाइयों के शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के पश्चात एक इकाई परीक्षण की आयोजना करनी चाहिए। जिसमें सभी इकाइयों से संबन्धित पद होने चाहिए। इसी प्रकार बड़ी इकाई के लिए एक से अधिक परीक्षण की योजना बनानी चाहिए।

इस प्रक्रिया में इकाई शिक्षण के पूर्ण होने के बाद ही कक्षा में शिक्षक द्वारा परीक्षण या परीक्षा किया जाएगा। इस प्रकार अगस्त, अक्टूबर, जनवरी और मार्च में क्रमश: पहली, दूसरी, चौथी और पाँचवी इकाइयों का 10-10 अंकों में कक्षा परीक्षा के रूप में मूल्यांकन करके अंक प्रदान किए जाते है तथा इन्हे प्रगति विवरण पत्र (मूल्यांकन प्रपत्र) पर अंकित किया जाता हैं। तीसरी और छठी इकाइयों का मूल्यांकन क्रमश: दिसंबर और मई माह में छमाही और वार्षिक परीक्षाओं के साथ क्रमश: 30 और 60 अंकों में सम्मिलित रूप में किया जाता है।

इकाई परीक्षण का प्रयोजन (Purpose of Unit Test)-

1. वार्षिक और अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ सामान्यत: सत्रांत समाकलित आंकलन होता है तथा अगली उच्च कक्षा में प्रोन्नति हेतु उपयोग किया जाता है। ये परीक्षण पूरे पाठ्यक्रम की विषयवस्तु को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है तथा प्राय: इसमें सभी क्षमताओं को निरूपित करना संभव नहीं हो पाता है जबकि इकाई परीक्षण में अधिक क्षमताओं का आंकलन किया जा सकता है यदि इसे नियमित रूप से आयोजित किया जाए।
2. इकाई परीक्षण एक प्रकार का रचनात्मक आंकलन है। यह विद्यार्थियों को पृष्ठपोषण उपलब्ध कराता है जिससे विद्यार्थी अपनी अधिगम कठिनाइयों को पहचान सकते है। यह अध्यापक के लिए भी उपयोगी होता है और जो विद्यार्थी सीखने में कठिनाई का अनुभव कर रहे है उनके लिए वैकल्पिक पाठ्योजना बना सकते है।
3. एक इकाई परीक्षण में सीमित क्षमताओं का आंकलन किया जाता है तथा समाकलित परीक्षण की अपेक्षा कम समय में आयोजित किया जाता है। सामान्यत: इकाई परीक्षण 30-40 मिनट के अवधि के कालांश में आयोजित किया जाता हैं। इस प्रकार से इकाई परीक्षण की तिथि से कक्षा और विद्यालय के क्रियाकलापों में व्यवधान उत्पन्न नहीं होता है।

इकाई परीक्षण की विशेषताएँ (Characteristics of Unit Test) –

1. यह एक सीमित दक्षताओं/क्षमताओं पर निर्भर करता है।

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

2. इसके द्वारा बच्चों का परीक्षण बहुत ही अनौपचारिक होता है। अर्थात इकाई परीक्षण सामान्य कक्षाकक्ष के समय, विद्यालय के अन्य क्रियाकलापों में बाधा उत्पन्न किए बिना, आयोजित किया जाता है।
3. इकाई परीक्षण के लिए अधिकतम अंक अध्यापक द्वारा निर्धारित किया जाता है। इकाई परीक्षण में अर्जित अंक, विद्यार्थियों के सबल और निर्बल पक्षों की पहचान करने से, अधिक महत्वपूर्ण नहीं है।
4. अध्यापक यह भी निर्धारित करता है कि प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कितना समय विद्यार्थियों को देना है तथा परीक्षण में कुल कितने पद शामिल करना है। यह पूर्णत: अध्यापक निर्मित परीक्षण है।
5. इकाई परीक्षण में विभिन्न प्रकार के पदों (मौखिक, लिखित निष्पादन) का समावेश किया जा सकता है।परंतु एक इकाई परीक्षण में पदों की संख्या सीमित होती है।
6. इसके द्वारा विद्यार्थियों के निष्पादन के आधार पर श्रेणीबद्ध नहीं किया जाता है वरन यह सीखने के एक उपकरण के रूप में कार्य करता है।
7. क्योंकि इसे अनौपचारिक वातावरण में आयोजित किया जाता है अत: यह विद्यार्थियों में परीक्षण के तनाव को कम करता है।

अर्द्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षाएँ (Half Yearly and yearly Test)

अभ्यास कार्यों और इकाई परीक्षण या परीक्षा के माध्यम से मूल्यांकन को सतत रूप से करते चलने से बच्चों के सीखने और उनमें होने वाले व्यवहार परिवर्तन का पता चलता रहता है।किन्तु साथ ही सीखे गए व्यवहार और प्राप्त ज्ञान में से बच्चों ने कितना लगभग स्थायी रूप से धारण किया है यह जानने के लिए अर्द्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षाओं की व्यवस्था के अनुसार कार्य करना होगा। अर्द्धवार्षिक परीक्षा प्रत्येक विषय में निर्धारित अंकों में तथा वार्षिक भी निर्धारित अंकों में ली जानी चाहिए। जिन विषयों में ग्रेड दिये जाएंगे। कक्षा- 1 व 2 में 70 % मौखिक तथा 30% लिखित प्रश्न पुछे जाएंगे । आगे लिखित प्रश्नों का प्रतिशत क्रमश: बढ़ता जाएगा।

अर्द्धवार्षिक परीक्षा के पूर्व तक 3 इकाइयों का शिक्षण कार्य पूरा करना अनिवार्य होगा। अर्द्धवार्षिक परीक्षा में 50 % प्रश्न तीसरी इकाई से तथा 50%प्रश्न पहली और दूसरी इकाइयों से पूछे जाएंगे।

इसी प्रकार वार्षिक परीक्षा में 30% प्रश्न इकाई से तथा 70% प्रश्न शेष पांचों इकाइयों पर आधारित होंगे। अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा के परीक्षण के निर्माण में निम्नलिखित पदों का ही अनुसरण किया जाता है-

A. परीक्षण की योजना बनाना (Planning of the test)-
   I. पाठ्य-वस्तु एवं उद्देश्यों का निर्धारण करना।
   II. पाठ्य-वस्तु एवं उद्देश्यों को भार देना।
   III. विभिन्न प्रकार के प्रश्नों की संख्या का निर्धारण करना।
   IV. परीक्षण के संबंध में अन्य निर्णय देना।

B. परीक्षण की रचना करना (Constructing of the test)-
   I. प्रश्नों की रचना करना।
   II. प्रश्नों का सम्पादन करना।
   III. परीक्षार्थियों के लिए निर्देश तैयार करना।
   IV. परीक्षण का सम्पादन करना।

C. परीक्षण को अन्तिम रूप देना (Finalizing of the test)-
   I. प्रश्नानुसार विश्लेषण करना।

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin@maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

II. अर्द्धवार्षिक की आलोचना करना। इकाई, अर्धवार्षिक तथा वार्षिक परीक्षा में प्रश्नों के निर्माण में एक ही प्रकार के पदों का अनुसरण किया जाता है।

सेमेस्टर प्रणाली (semester system)

विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन प्राय: वार्षिक, द्विवार्षिक, त्रिवार्षिक, एवं चतुवार्षिक स्तर पर किया जाता हैं। हाईस्कूल और इंटरमीडिएट सामान्य तौर पर द्विवार्षिक पाठ्यक्रम हैं। स्नातक पाठ्यक्रम सामान्य तौर पर त्रिवार्षिक होते है। जबकि अभियांत्रिकी का स्नातक पाठ्यक्रम चार वार्षिक होता है और चिकित्सा का स्नातक पाठ्यक्रम पाँच वर्षीय होता है। सामान्य तौर पर इस सभी परीक्षाओं में परीक्षा वार्षिक रूप से ली जाती है। वर्ष में दो बार परीक्षा का आयोजन किया जाता हैं। हाईस्कूल तथा इंटरमीडिएट में प्राय: दो वर्ष के ज्ञान का मूल्यांकन एक बार में ही किया जाता है। स्नातक स्तर में जैसे बी॰ए॰, बी॰एस॰सी॰ तथा बी॰काम॰ में वर्ष में एक बार पूरे वर्ष के ज्ञान का मूल्यांकन किया जाता है। इन परीक्षाओं में अंकों के आधार पर छात्रों को प्रमाणपत्र तथा उपाधियाँ दी जाती है।यहाँ यह भी ध्यान देना होगा कि कुछ पाठ्यक्रम ऐसे भी होते है जिनमें परीक्षा त्रिमासिक, अर्द्धवार्षिक रूप से भी परीक्षाओं का आयोजन होता है। वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित पाठ्य-वस्तु अधिक विस्तृत होती है। जबकि त्रिमासिक या छमाही परीक्षा में पाठ्य-वस्तु सीमित मात्रा में होती है। शैक्षिक पाठ्यक्रम की अवधि रहने के कारण छात्र परीक्षा के निकट आने पर ही परीक्षा की तैयारी करते हैं। बाह्य परीक्षा के कारण मात्र चयनित पाठ्यक्रम को ही तैयार करते हैं। इससे शिक्षा प्रक्रिया परीक्षा केन्द्रित हो जाती है,जिसका वार्षिक रूप से सम्पूर्ण मूल्यांकन नहीं हो पाता है। इस शिक्षा प्रणाली की कमजोरियों के कारण छात्रों का ध्यान ज्ञानार्जन से हटकर केवल परीक्षा उत्तीर्ण करने तक रह जाता है। शिक्षा प्रणाली को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए ही सेमेस्टर प्रणाली लागू करने का सुझाव दिया गया।

सेमेस्टर प्रणाली आज धीरे-धीरे सभी व्यावसायिक तथा परास्नातक कक्षाओं में अपना ली गयी है। इस प्रणाली के अंतर्गत किसी उपाधि विशेष के लिए निर्धारित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम को 6- 6 माह के खण्डों में विभाजित करके दिया जाता है। दो वर्षीय पाठ्यक्रम (परास्नातक) के लिए चार सेमेस्टर की परीक्षा दी जाती है। इसमें 6-6 खण्डों के भाग को सेमेस्टर कहा जाता है। तृवर्षीय पाठ्यक्रम को 6 सेमेस्टर में तथा चार वर्षीय पाठ्यक्रम के 8 सेमेस्टर में बाँट दिया जाता है।

सेमेस्टर प्रणाली में सत्र की अवधि कम होने के कारण सम्पूर्ण वर्ष छात्र को अध्ययनरत रहना पड़ता है। इसमें शिक्षा सत्र एक वर्ष या दो वर्ष की न होकर मात्र 6 माह का होता है तथा प्रत्येक 6 माह के लिए ही पाठ्यक्रम निर्धारित होता है। पाठ्यक्रम का अध्ययन, अध्यापन, परीक्षा सभी सुव्यवस्थित तरीके से निर्धारित अवधि में सम्पन्न किए जाते है, परीक्षा पूर्णत: बाह्य या आंतरिक अथवा बाह्य एवं आंतरिक दोनों का मिला-जुला रूप हो सकती है। किसी पाठ्यक्रम उपाधि हेतु निर्धारित सभी सेमेस्टरों की समाप्ति के पश्चात उन सभी सेमेस्टरों में प्राप्त किए गए अंकों का योग निकालकर छात्रों को श्रेणी प्रदान की जाती है।

सेमेस्टर प्रणाली वर्तमान वार्षिक परीक्षा में व्याप्त कमियों को समाप्त करने के उद्देश्य से ली गयी है। इसमें केवल अन्तिम परीक्षा के समय ही परीक्षाफल का इंतज़ार करना पड़ता है तथा एक के बाद दूसरा सेमेस्टर चलता रहता है। किसी विषय में यदि कोई छात्र अनुत्तीर्ण हो भी जाता है तो वह उस विषय का प्रश्नपत्र पुन:अगली बार दे सकता है। सेमेस्टर प्रणाली सम्पूर्ण वर्ष शिक्षकों तथा छात्रों को शिक्षण एवं अधिगम में व्यस्त रखती है। कुछ शिक्षाविदों का मानना है कि सेमेस्टर प्रणाली में अनुशासनहीनता की समस्या भी काफी सीमा तक समाप्त हो जाती है।

इतने गुण होते हुए भी इस व्यवस्था में कुछ दोष हैं-

1. समय-समय पर परीक्षाओं का आयोजन करना प्रशासनिक ढंग से एक समस्या है।
2. छात्रों की संख्या कम होने पर तो सेमेस्टर प्रणाली से परीक्षा कराई जा सकती है परंतु छात्रों की अधिक संख्या होने पर सेमेस्टर से परीक्षा कैसे कराई जा सकती है।

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

प्रश्न बैंक का उपयोग (Use of Question Bank)

वर्तमान परीक्षा प्रणाली के प्रमुख दोषों में से एक दोष परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों का अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया के साथ तालमेल का अभाव है। प्रश्नपत्र रचयिता अपनी पसंद-नापसंद, रुचि-अभिरुचि तथा प्रश्न निर्माण कौशल के आधार पर प्रश्नों की रचना करके प्रश्नपत्र तैयार करता है। प्रायः देखा जाता है कि प्रश्न-पत्रों में सम्मिलित अधिकांश प्रश्न बहुत ही सतही स्तर के होते हैं तथा भाषायी अंतर को छोड़कर लगभग उसी रूप में थोड़े-थोड़े समय के अंतराल पर उन प्रश्नों की प्रश्नपत्रों में बार-बार पुनरावृति होती रहती है। इसके अतिरिक्त प्रश्नपत्र निर्माता द्वारा तैयार किए गए प्रश्नपत्र न तो सम्पूर्ण पाठ्यक्रम का सही ढंग से प्रतिनिधित्व कर पाते हैं तथा न ही वे छात्रों के ज्ञान, बोध व कौशल का विस्तृत अर्थों में मूल्यांकन कर पाते हैं। प्रश्नपत्रों के इन कमियों के फलस्वरूप छात्र परीक्षा हेतु कुछ केवल विशिष्ट प्रश्नों/प्रकरणों को तैयार करते हैं तथा शेष को महत्वहीन मानकर छोड़ देते हैं। वस्तुत: पाठ्यक्रम में सम्मिलित समस्त प्रकरण महत्वपूर्ण एवं उपयोगी होते हैं तथा छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे उन सभी का समुचित अध्ययन करेंगे।

प्रश्न बैंकों के निर्माण का उद्देश्य जहां एक ओर प्रश्नपत्र निर्माता को प्रश्नपत्र तैयार करने में सहायता करना है वही साथ ही साथ अध्यापकों तथा छात्रों को शिक्षण-अधिगम में सहायता करना भी है। जैसाकि नाम से स्पष्ट है, प्रश्न बैंक वस्तुत: तैयार प्रश्नों का एक समूह होता है। प्रश्न बैंक में किसी विषय या प्रकरण की विभिन्न इकाइयों पर अनेक प्रश्नों को तैयार करके संग्रहीत किया जाता है। प्रश्न बैंक न केवल प्रश्न निर्माताओं के लिए उपयोगी होते है वरन छात्र और अध्यापकगण भी इन प्रश्न बैंकों में सम्मिलित प्रश्नों का लाभ उठा सकते हैं। वस्तुत: प्रश्न बैंक शिक्षण-अधिगम तथा मूल्यांकन के लिए एक सुलभ आधार का कार्य संपादित करते हैं। इनमें एक ही विषय/प्रकरण/इकाई पर अनेक प्रश्न दिये होते हैं। अध्यापकगण इन प्रश्नो को दृष्टिगत रखकर अपनी शिक्षण योजना को व्यवस्थित करता है, छात्रगण इन प्रश्नो को ध्यान में रखकर परीक्षा की तैयारी कर सकते हैं जबकि परीक्षक इन प्रश्नों की सहायता से एक संतुलित प्रश्नपत्र की रचना कर सकता है।

प्रश्न बैंक कई प्रकार के हो सकते हैं। प्रश्न बैंकों के कुछ प्रमुख प्रकार-

1) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों का बैंक (bank of objective type questions)
2) लघु-उत्तरीय प्रश्नों का बैंक (Bank of Short answer questions)
3) विस्तृत उत्तर प्रश्नो का बैंक (Bank of Detailed answer questions)
4) मिश्रित प्रश्नों का बैंक (Bank of Miscellaneous questions)

आजकल प्रश्न बैंकों का निर्माण प्रत्येक विषय में किया जा रहा है। इससे आवश्यकता पड़ने पर परीक्षार्थी और परीक्षक दोनों इसका लाभ उठा सकते हैं। प्रत्येक प्रश्न बैंक में निम्नलिखित जानकारी देनी आवश्यक होती है।

1. अंतर्वस्तु क्षेत्र/शीर्षक जिस पर प्रश्न पूछे गए हैं।
2. परीक्षार्थी की विशेष बौद्धिक योग्यता परीक्षण होना है।
3. प्रश्न/ पद का उत्तर देने के लिए निर्धारित भाव/समय
4. प्रश्न/पद प्रकार
5. प्रत्येक प्रश्न/पद के लिए निर्धारित अंक
6. सांपल जनसंख्या की औसत निष्पत्ति के आधार पर गणना की गयी हो। कठिनाई मूल्य अथवा विभेद शक्ति।
7. प्रश्नों/पदों की कुंजी।

प्रश्न बैंक के विकास की अवस्थाएँ –

1. प्रश्नों/पदों का संग्रह
2. प्रश्नों/पदों का पूर्व प्रमाणीकरण (pre-validation)
3. प्रश्नों/पदों के पश्चात प्रमाणीकरण (post-validation)

4. क्रियात्मक कल्याणों की परिपूर्ति (Supplementary)
5. प्रश्नों/पदों को भंडारित करना (storing)

प्रश्न बैंक के लाभ –

1. इससे समस्त राष्ट्र में विभिन्न स्तरों में प्रश्नों/ पदों के समस्त मानक का उपयोग संभव होता हैं।
2. इससे शिक्षण प्रणाली में वांछित परिवर्तन करने में सहायता मिलती है।
3. इससे विशेष विश्लेषण के लक्ष्य स्थिर होते हैं और पाठ्यक्रम विकास की स्पष्ट दिशा मिलती है।
4. इससे सबसे सस्ती परीक्षा प्रणाली का विकास संभव हो है, जो सस्ती होने के साथ-साथ प्रमाणिक और प्रभावशाली है।

प्रश्न बैंक के दोष –बने-बनाए प्रश्नों के उपलब्ध हो जाने पर प्रश्न निर्माता नवीन प्रश्नों की रचना करने के श्रम से बचना चाहेगा तथा उसके चिंतन, संवेदनशीलता व सृजनात्मकता का सदुपयोग नहीं हो सकेगा। इससे अतिरिक्त प्रश्न बैंकों की उपलब्धता के परिणामस्वरूप शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का केन्द्रबिन्दु प्रश्नबैंकों के बन जाने की संभावना हो सकती है तथा प्रश्न बैंकों में संग्रहीत किए गए प्रश्नों के उत्तर कालांतर में गाइड बुकों के रूप में बाज़ार में प्रचुरता से उपलब्ध होने लगेंगे जो शैक्षिक दृष्टि से अत्यंत घटक परिणति होगी।

प्रश्न बैंकों के कारण उत्पन्न हो सकने वाले इस दोष का निवारण प्रश्न बैंकों को गत्यात्मक रूप देने से संभव हो सकेगा। इसके लिए प्रश्न –बैंकों में समय-समय पर नवीन प्रश्नों को जोड़ते जाने तथा पुराने प्रश्नों को हटाने की सतत आवश्यकता होगी। नवीन प्रश्नों के समावेश से प्रश्न बैंकों की वजह से शिक्षण, अधिगम व परीक्षा में एकरूपता की संभावना समाप्त हो जाएगी एवं तब प्रश्न बैंकों के द्वारा शिक्षा प्रक्रिया के एक उपयोगी उपकरण के रूप में कार्य करने की आशा की जा सकेगी।

मुद्दें और समस्याएँ (issues and Problems)

अंक बनाम ग्रेड (Marking vs Grading)-किसी परीक्षा में छात्र को दिये गए अंक एक प्रकार का परिमाणात्मक (quantitative) मापन प्रस्तुत करते हैं, जबकि ग्रेड, गुणात्मक (qualitative) विवरण देते हैं। इसी तरह छात्रों के प्रामांक लगभग स्थिर मात्रा बताते हैं जैसे –सेंटीमीटर, डिग्री या रुपया-पैसा आदि। किन्तु यहाँ ध्यान रखा होगा कि इनका आधार पूर्ण स्केल (absolute scaling) नहीं होता हैं। इसके विपरीत ग्रेडस मूल्य (value) संसूचक होते हैं। ये योग्यताक्रम जैसे प्रथम, द्वितीय,तृतीय आदि के अनुस्थितियों के प्रतीक भी होते हैं।

ग्रेडस (Grades)	अंक (Marks)
1. ये सामान्यत: एक ही अर्थ के संसूचक होते हैं।	1. इनके अर्थ भिन्न- भिन्न रूप में लगाए जा सकते है।
2. वैज्ञानिक ढंग से इनकी व्याख्या संभव होती है।	2. इनकी वैज्ञानिक ढंग से व्याख्या करना कठिन होता है।
3. ये व्यापक रूप में मान्य मनोवैज्ञानिक एवं मनोमितिक सिद्धांतों पर आधारित होते हैं।	3. अंक किसी सर्वमान्य मनोवैज्ञानिक अथवा शैक्षिक मापन के सिद्धांतों पर आधारित नहीं होते।
4. ये निष्पत्ति के किसी समान स्तर के अनुरूप समतुल्यता के स्केल पर व्यक्त होते हैं।	4. ये किसी समान स्तर के अनुरूप समतुल्यता नहीं रखते।
5. ये मापन-त्रुटि के वास्तविक अवबोध पर आधारित होते हैं।	5. ये बिना किसी अपेक्षा के इस मान्यता पर आधारित

6. ये कला एवं विज्ञान के छात्रों के लिए समतुल्य अर्थ ज्ञापित करते हैं। 7. ग्रेडस का योग एवं उनका औसत सही रूप में ज्ञात किया जा सकता है। 8. छात्रों कि योग्यताओं का सही पार्श्वचित्र (Profile) प्रदर्शित करने हेतु इनके माध्यम से सीधे व्याख्या की जा सकती हैं।	होते हैं कि छात्रों के प्राप्तांक (Raw Acores) उनके वास्तविक प्राप्तांक के समतुल्य है। 6. ये कला एवं विज्ञान के छात्रों के लिए अलग-अलग अर्थ ज्ञापित करते हैं। 7. प्राप्तांक का योग एवं उनका औसत सही रूप में नहीं ज्ञात किया जा सकता है। 8. छात्रों की योग्यताओं का वास्तविक पार्श्वचित्र (Profile) मालूम करने के लिए इनकी सीधे व्याख्या नहीं की जा सकती।

ग्रेडिंग (grading)-विद्यालयों या शिक्षा के उच्च स्तरों-महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों पर ग्रेडिंग की प्रथा प्राय: पाँच या सात बिन्दुओं पर इस मान्यता के साथ प्रचलित है कि छात्रों की निष्पत्तियाँ सामान्य-विवरण (normal-distribution) प्रदर्शित करती हैं। पाँच बिन्दुओं पर आधारित ग्रेडिंग की इस मान्यता को इस प्रकार व्यक्त किया गया

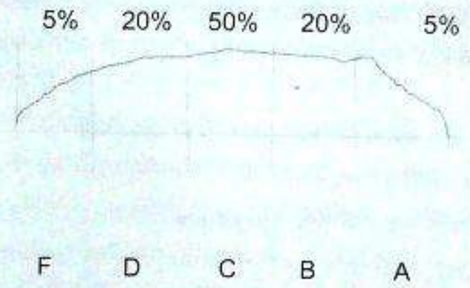

इस ग्रेडिंग के तहत यह मान्यता होती है कि छात्रों को उनकी निष्पत्तियों के स्तर अनुसार पाँच ग्रेडस में रखा जा सकता है जो इस प्रकार हैं -

निष्पत्ति स्तर का वर्गीकरण		ग्रेड
अति उत्तम	Excellent	A
उत्तम	Good	B
सामान्य	Average	C
सामान्य से कम	Borderline	D
सामान्य से बहुत कम	Not acceptable	F

प्रसामान्य वितरण (normal distribution) की अवधारणा के अनुसार अपनी निष्पत्ति के संदर्भ में 5% छात्र अति उत्तम, 20% छात्र उत्तम, 50% छात्र सामान्य, 20% छात्र सामान्य से कम तथा 5% छात्र सामान्य से बहुत कम वर्ग में रखे जाते हैं। इन्हें क्रमश: A, B, C, D तथा F अक्षर द्वारा इंगित किया जाता है। मूल्यांकन के निहित अर्थ के रूप में F तथा D वर्ग के छात्रों को सुधारात्मक शिक्षण हेतु संस्तुत किया जाता है जिससे वे अपनी न्यूनताओं को दूर कर सकें।

परीक्षा सुधार के क्षेत्र में कार्यरत विशेषज्ञों का ध्यान इस विचार की ओर शीघ्रता से आकर्षित हुआ एवं उन्होने माना कि अंकन वर्गों की संख्या को कम करके अंकन त्रुटियों को काफी सीमा तक समाप्त किया जा सकता है, इसलिए उन्होने ग्रेड प्रणाली को अपनाए जाने का सुझाव दिया। भारत में कुछ प्रगतिशील शिक्षा संस्थाओं, माध्यमिक शिक्षा परिषदों, विश्वविद्यालयों तथा तकनीकी व व्यावसायिक शिक्षा संस्थाओं ने ग्रेड प्रणाली का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया है। परंतु ग्रेड प्रणाली को अपनाए जाने के प्रस्ताव को सिद्धांतत: स्वीकार करने के बावजूद भी ग्रेड की संख्या पर कोई सर्वसम्मत निर्णय नहीं हो पाया हैं। कुछ 5 बिन्दु ग्रेड प्रणाली को उपयुक्त बताते है, कुछ विद्वान 7 बिन्दु ग्रेड प्रणाली को, तथा कुछ विद्वान 9 बिन्दु ग्रेड प्रणाली को उचित ठहराते है। सैद्धांतिक दृष्टि से ग्रेड प्रणाली में कितने बिन्दु हो सकते है। पाँच बिन्दु एवं सात बिन्दु ग्रेड प्रणाली के विभिन्न ग्रेडों तथा उनका शाब्दिक वर्णन एस प्रकार है –

विभिन्न ग्रेडों का शाब्दिक वर्णन

पाँच बिन्दु ग्रेड प्रणाली (five point grading system)

ग्रेड (Grade)	ए. A	बी. B	सी. C	डी. D	एफ. F
ग्रेड बिन्दु (grade Point)	4	3	2	1	0
शाब्दिक अर्थ (Verbal Meaning)	विशिष्ट Out standing	उत्तम Above average	औसत Average	निम्न Below average	अनुत्तीर्ण Fail

सात बिन्दु ग्रेड प्रणाली (seven point grading system)

ग्रेड (Grade)	ओ. O	ए. A	बी. B	सी॰ C	डी. D	ई. E	एफ. F
ग्रेड बिन्दु (grade Point)	6	5	4	3	2	1	0
शाब्दिक अर्थ (Verbal Meaning)	विशिष्ट Out standing	अति उत्तम Very good	उत्तम Good	औसत Averag e	संतोषप्रद Satisfac tory	निकृष्ट Poor	निकृष्टतम Very poor

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू॰ जी॰ सी॰) के द्वारा 1975-1976 में ग्रेड प्रणाली पर आयोजित की गयी क्षेत्रीय कार्यशालाओं में 7 बिन्दु ग्राद प्रणाली को अपनाये जाने पर आम सहमति थी क्योंकि इससे मूल्यांकन में आवश्यक परिमार्जन रहेगा तथा किसी भी ग्रेड के अंदर बहुत अधिक विभिन्नताएँ नहीं होगी। इसके अलावा 7 बिन्दु ग्रेड प्रणाली इसलिए भी उपर्युक्त है क्योंकि छात्रों को उनकी योग्यता के आधार पर बाँटते समय अध्यापकों के द्वारा भी साधारणत: सात श्रेणियों का

प्रयोग किया जाता है। ये सात श्रेणी हैं-विशिष्ट, अति उत्तम, उत्तम, औसत, संतोषप्रद, निकृष्ट तथा निकृष्टतम। इनको क्रमशः O. A. B. C. D. E. व F.अक्षर ग्रेड से व्यक्त किया जा सकता है। कार्यशालाओं में यह भी कहा गया कि कुछ कृषि विश्वविद्यालय तथा तकनीकी संस्थाओं ने 5 बिन्दु ग्रेड प्रणाली प्रारम्भ कर दी है, यह उनकी परिस्थितियों में उपयुक्त हो सकती हैं क्योंकि इन संस्थाओं में छात्र अधिक सजातीय होते हैं। चिकित्सा तथा इंजीनियरिंग संकायों में आवश्यकतानुसार 7 बिन्दु ग्रेड के अतिरिक्त अन्य प्रणाली भी प्रयोग में लाई जा सकती है।

वैसे तो परीक्षकों के द्वारा सीधे-सीधे ग्रेड प्रदान किया जाना अधिक वांछनीय है, परंतु आवश्यकता होने पर प्राप्तांकों को भी ग्रेड में बदला जा सकता है। प्राप्तांकों को ग्रेड में बदलने के लिए प्राप्तांकों के विवरण को सामान्य प्रायिकता वक्र (NPC) के आधार पर 7 भागों में विभाजित करके उन्हें ग्रेड प्रदान किया जा सकता है। विभिन्न विषयों या पाठ्यक्रम में न्यूनतम ग्रेड औसत विश्वविद्यालय या अन्य परीक्षा परिषद के द्वारा निर्धारित किया जा सकता है। यह निर्धारण उस क्षेत्र कि आवश्यकता के ऊपर निर्भर करेगा फिर भी सामान्यत: सम्पूर्ण पाठ्यक्रम के लिए न्यूनतम औसत ग्रेड डी॰ या D होनी चाहिए तथा यदि किसी छात्र का औसत ग्रेड डी. या इससे श्रेष्ठ हो परंतु उसने यदि किसी एक प्रश्नपत्र में डी. से कम ग्रेड प्राप्त किए हो तो उसे इस शर्त पर अगली कक्षा में भेजा जा सकता हैं कि वह उस प्रश्नपत्र को अगले वर्ष उत्तीर्ण कर लेगा। छात्रों के उत्तर को सीधे- सीधे ग्रेड देकर मूल्यांकित करने की स्थिति में प्रत्येक प्रश्न के उत्तर को परीक्षक अलग- अलग ग्रेड प्रदान करेगा तथा फिर सम्पूर्ण उत्तरपुस्तिका के लिए ग्रेड औसत ज्ञात कर लिया जाएगा। ग्रेड औसत ज्ञात करने के लिए पहले सभी ग्रेडों को ग्रेड बिन्दुओं में बदला जाएगा, तब इसका औसत ज्ञात कर लिया जाएगा जिसे ग्रेड बिन्दु औसत कहा जाएगा।

ग्रेड प्रणाली के लाभ (Merits of Grading System)-ग्रेड प्रणाली के मुख्य लाभ निम्नवत हैं:

1. प्रणाली अत्यधिक उपयोगी है। विभिन्न संस्थाओं या विश्वविद्यालयों का अंकन स्तर भिन्न-भिन्न होने पर प्राप्तांकों के द्वारा परीक्षार्थियों की तुलना तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती हैं। ग्रेड प्रणाली ऐसी स्थिति में एक उपयोगी साधन का कार्य कर सकेगी।
2. ग्रेड की सहायता से छात्रों का मूल्यांकन अधिक विश्वसनीय ढंग से हो सकता है। अत: ग्रेड प्रणाली का प्रयोग परीक्षा परिणामों की विश्वसनीयता को बढ़ाता हैं।
3. ग्रेड प्रणाली विभिन्न विषयों तथा संकायों में छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि की तुलना करने के लिए एक उभयनिष्ठ पैमाने (common scale) का कार्य सफलता पूर्वक कर सकती है।
4. छात्रों की अभिरुचि तथा योग्यता के आधार पर भावी पाठ्यक्रम के चयन करने की दृष्टि से ग्रेड प्रणाली अधिक उपयुक्त तथा वैज्ञानिक है।
5. ग्रेड प्रणाली को अपनाए जाने पर एक स्थान से दूसरे स्थान को प्रव्रजन (migration) करते समय होने वाली कठिनाइयाँ काफी कम हो सकेंगी जिससे अंतर्क्षेत्रीय स्थानांतरण में सुविधा हो सकेगी।

वस्तुनिष्ठता बनाम व्यक्तिनिष्ठता (Objectivity vs Subjectivity)-वस्तुनिष्ठ परीक्षा से तात्पर्य ऐसे परीक्षणों से है जिसकी रचना अध्यापक अपने अनुभवों के आधार पर शिक्षण उद्देश्यों, अपेक्षित व्यावहारिक परिवर्तनों एवं आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु करता है। इस प्रणाली के अनुसार प्रश्न-पत्र में प्रश्न तो पर्याप्त संख्या में होते है लेकिन उनका उत्तर एक या दो शब्दों में ही देना होता है या मात्र निशान लगाना होता हैं।

व्यक्तिनिष्ठ (निबंधात्मक) परीक्षा में परीक्षार्थी किसी भी प्रश्न का उत्तर विस्तार से देता है,उत्तर की कोई सीमा निर्धारित नहीं की जाती है तथा परीक्षार्थी अपने मौलिक विचारों को अभिव्यक्त करने में पूर्ण स्वतंत्र होता है। यद्यपि इन

परीक्षाओं के माध्यम से परीक्षार्थी की विभिन्न मानसिक योग्यताओं, जैसे- रुचियों, क्षमताओं, अभिवृत्तियों कौशलों आदि का सही मूल्यांकन संभव है।

विशेष बिन्दु	निबंधात्मक परीक्षा	वस्तुनिष्ठ परीक्षा
I.प्रश्न रचना (Construction of Items)	प्रश्नों की रचना करना सरल कार्य है । इसमें प्रश्नों की संख्या कम होती है । वे सामान्य प्रकार के होते हैं । इनके उत्तर लंबे होते हैं ।	प्रश्नों की रचना करना अपेक्षाकृत कठिन कार्य हैं यह अधिक तथा विशिष्ट होते है । उत्तर छोटे होते हैं ।
II.विषयवस्तु (Content Coverage)	सीमित पाठ्यवस्तु का मूल्यांकन होता है ।	पाठ्यवस्तु के व्यापक रूप का मूल्यांकन संभव होता है ।
III.उद्देश्य प्राप्ति (Achievement of Objectives)	अवबोध उद्देश्य की प्राप्ति सफलतापूर्वक हो जाती हैं । ज्ञान की परीक्षा समान्यत: हो सकती है ।	ज्ञान उद्देश्य की प्राप्ति सफलतापूर्वक हो जाती है । अवबोध की परीक्षा भी सामान्यत: हो सकती है ।
IV.सार्थकता (Significance)	ये परीक्षाएँ उपलब्धि परीक्षा, चयन वर्गीकरण के लिए अधिक उपयुक्त है ।	ये परीक्षाएँ निष्पत्ति परीक्षा, निदान, बुद्धि एवं प्रवणता परीक्षाओं आदि के लिए उपयुक्त हैं ।
V.अभिव्यक्ति तथा चयन (Expression & Selection)	परीक्षार्थी प्रश्न का उत्तर अपने शब्दों में देने पूर्ण स्वतंत्र है ।	परीक्षार्थी को दिये गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करना होता है ।
VI.प्रतिदर्श (Sample)	ये परीक्षाएँ प्रश्नों के एक छोटे न्यादर्श पर आधारित होती है ।	ये परीक्षाएँ प्रश्नों के एक बड़े न्यादर्श पर आधारित होती है ।
VII.लेखन कला (Writing Skill)	परीक्षार्थी के सुंदर लेख एवं अभिव्यक्ति कौशल का प्रभाव उसके अंकों पर पड़ता है । इसमें परीक्षार्थी सोचता है और लिखता है ।	लेखन कला का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है । इसमे परीक्षार्थी पढ़ता है तथा सोचता हैं ।
VIII.परीक्षक मन: स्थिति (Examiner's mood)	इन परीक्षाओं का निर्माण जितना आसान है मूल्यांकन उतना ही कठिन । परीक्षक की मनोवृत्ति छायी रहती है ।	परीक्षा निर्माण जितना कठिन है मूल्यांकन उतना ही सरल । परीक्षक की मनोवृत्ति प्रश्नपत्र निर्माण में बाधक हो सकती है मूल्यांकन प्रक्रिया में नहीं ।
IX.परीक्षार्थी एवं परीक्षक की स्वतन्त्रता (Freedom to both)	दोनों स्वतंत्र हैं । परीक्षार्थी प्रश्नोंत्तर देने में और परीक्षक अंक प्रदान करने में ।	दोनों की स्वतन्त्रता पर अंकुश रखा जाता है । परीक्षार्थी मात्र विकल्प चुनने में स्वतंत्र है ।

X.विश्वसनीयता एवं वैधता (Reliability and Validity)	इन परीक्षाओं की विश्वसनीयता और वैधता दोनों निम्न स्तर की होती हैं।	इन परीक्षाओं की विश्वसनीयता वैधता दोनों उच्च स्तर की होती हैं।
XI.मानक (norms)	परीक्षा के मानक स्थापित नहीं किए जा सकते हैं।	इन परीक्षाओं के प्रामाणिक मानक स्थापित किए जा सकते है।
XII.अंकन (Scoring)	परीक्षक का विषय पर पूर्ण अधिकार होने पर ही अंकन ठीक प्रकार से संभव है।	अंकन प्रक्रिया सरल है। अंकन कुंजी बन जाने से कोई भी अंकन कर सकता है।
XIII.प्रशासन (Administration)	प्रशासन सरल होता है। कोई विशिष्ट निर्देश देने की आवश्यकता नहीं पड़ती।	प्रशासन अपेक्षाकृत अधिक कठिन है। विशिष्ट निर्देशों को देने में प्रशिक्षण एवं सावधानी दोनों आवश्यक है।
XIV.अंक वितरण (Distribution of marks)	परीक्षण स्व अंक सीमा निर्धारित करता है। अच्छे स्तर के लिए वह 60-80% तथा असंतोषजनक उत्तर के लिए 10- 25% अंक निर्धारित कर लेता है।	परीक्षण स्व अंक सीमा निर्धारित करता है। परीक्षक को कोई छुट नहीं दी जाती है।

शिक्षण और अधिगम पर प्रवेश परीक्षा एवं सार्वजनिक परीक्षाओं का प्रभाव
(Impact of Entrance test and Public Examination on Teaching and learning)

प्रवेश परीक्षा (entrance test)-प्रवेश परीक्षा का आयोजन छात्रों के अधिगम की जाँच के लिए ही जाता है। वर्तमान समय में सामान्य परीक्षाओं में बढ़ती नकल की प्रवृत्ति के कारण योग्य व्यक्तियों का चयन विभिन्न परीक्षाओं में करने के लिए ही परीक्षा ली जाती हैं।

पहले प्रवेश परीक्षाएँ केवल व्यावसायिक कोर्सों जैसे मेडिकल एवं इंजीनियरिंग के लिए तथा नौकरियों में चयन के लिए ही ली जाती थी किन्तु, वर्तमान समय में सभी महत्वपूर्ण परीक्षाओं में चाहे वो चतुर्थ श्रेणी की ही क्यों न हों चयन प्रवेश परीक्षा के आधार पर ही किया जाता है। प्रवेश परीक्षाओं के माध्यम से छात्र के ज्ञान तथा योग्यता के आधार पर उनका वर्गीकरण तथा चयन बहुत सरलता से किया जा सकता है।

प्रवेश परीक्षाओं का मूल्यांकन, कम्प्युटर से होने के कारण परीक्षा कार्य अधिक व्यवस्थित तथा शीघ्रता से सम्पन्न होने लगा हैं। इन परीक्षाओं का प्रशासन सामूहिक रूप से किया जाता है। प्रश्न- पत्रों के कई सेट एक साथ रखे जाते हैं जिनसे नकल की संभावना कम से कम हो सके। कम्प्युटर में प्रश्नों को सही उत्तर के साथ फीड किया जाता है। परीक्षा अधिकतर वस्तुनिष्ठ प्रकार की होती है, क्योंकि परीक्षणों का अंकन कार्य कम्प्युटर त्रुटिरहित ढंग से अत्यधिक शीघ्रता से करता है। कुछ महत्वपूर्ण एवं उच्च स्तरों की परीक्षाओं में दीर्घ उत्तरीय प्रश्न भी होते है जिसमें छात्रों का प्रस्तुतीकरण, लेखन शैली आदि देखी जाती है। इन परीक्षाओं के माध्यम से ज्ञान एवं बोध युक्त प्रश्न रखें जाते हैं।

सार्वजनिक परीक्षाएँ (Public Examination)- शिक्षा प्रक्रिया के तीन आधार शिक्षण, अधिगम एवं परीक्षा हैं। अगर इनमें से कोई भी एक आधार कमजोर होता है तो उसका दुष्परिणाम शिक्षा प्रक्रिया के विभिन्न पक्षों पर पड़ना स्वाभाविक है और परिणामत: सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था बुरी तरह से प्रभावित हो जाती है।

वर्तमान समय में परीक्षा परिणामों का एकमात्र शैक्षिक उपयोग आगामी कक्षा में प्रोन्नति के लिए छात्रों को उम्मीदवार घोषित करना मात्र रह गया है। शिक्षण- अधिगम प्रक्रिया में सुधार लाने, शिक्षण विधियों में उन्नयन करने,

पाठ्यक्रम संशोधित करने अथवा शैक्षिक क्रियाकलापों में परिवर्तन लाने जैसे कार्यों में परीक्षा परिणाम कोई भी भूमिका निभाने में असमर्थ रहे हैं और तो और विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षा आयोजित करने एवं विभिन्न रोजगारों के लिए चयन परीक्षा की व्यवस्था करने की प्रवृत्ति ने परीक्षा परिणामों के महत्व को नकार सा दिया है। ऐसी स्थिति में वर्तमान परीक्षा प्रणाली में सुधार लाकर ही शिक्षण अधिगम की गुणवत्ता को सुधारा जा सकता है। वास्तव में परीक्षा प्रणाली में सुधार करने का प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है और इसके लिए उसमें सुधार लाकर उसे समसामयिक और व्यावहारिक दृष्टि उपयोगी बनाना अत्यंत आवश्यक है। परीक्षा सुधार में प्रमुख उद्देश्यों पर बल देना होगा जैसे-रटने तथा स्मरण पर ज़ोर देना समाप्त करना होगा तथा बोध को बढ़ाना होगा। चयनित अंतर्वस्तु के अध्ययन अध्यापन की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना होगा। परीक्षा में आत्मनिष्ठता की प्रवृत्ति पर रोक लगाना छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन करने के लिए ऐसे वस्तुनिष्ठ प्रश्न तैयार करना होगआ जो वैध तथा विश्वसनीय हों तथा जिससे प्राप्त परिणामों का उपयोग शिक्षण – अधिगम प्रक्रिया को अधिक-से – अधिक प्रभावी बनाने के लिए सार्थक ढंग से किया जा सके। परीक्षा संचालन में गत्यात्मकता लानी होगी तथा परीक्षा परिणामों की तर्कसंगत व्याख्या करनी होगी।

आंकलन और मूल्यांकन में प्रवृत्तियाँ (Trends in Assessment and Evaluation)

ऑनलाइन परीक्षा(Online Examination)-शिक्षा में बढ़ते हुए कम्प्युटर और इंटरनेट के चरणों के कारण ऑनलाइन परीक्षाएँ होने लगी हैं। विभिन्न प्रकार के रोजगारों के लिए ली जाने वाली परीक्षाएँ, धीरे-धीरे सभी ऑनलाइन होती जा रही हैं। रोजगारों के लिए फॉर्म भरने की प्रवृत्ति तो पहले ही ऑनलाइन हो चुकी है, अब परीक्षाएँ भी ऑनलाइन होने लगी हैं। इन परीक्षाओं में परीक्षार्थी को एक केंद्र आवंटित कर दिया जाता है जहां पर कम्प्युटर इंटरनेट की व्यवस्था होती है। वहाँ पर प्रश्नपत्र तत्काल ही खुलता है और प्रश्नपत्र के कई वर्ग जैसे, A, B, C, D होने है जिससे छात्र के नकल करने की संभावना बहुत कम रहती है। इस प्रकार की परीक्षाओं में प्रश्न-पत्र कम्प्युटर में ही फीड होता है तथा छात्र को दिया भी नहीं जाता है जिससे प्रश्न पत्र कक्षा के बाहर न जा सके।

परीक्षा में कम्प्युटर का उपयोग (Use of Computer in Examination)-आज के दौर में परीक्षा संबंधी कार्य में कम्प्युटर के प्रयोग की संभावनाएँ बहुत अधिक है। अनेक शिक्षा संस्थाओं तथा परीक्षा निकायों ने परीक्षा कार्य को अधिक गति से करने तथा मानवीय त्रुटियों की संभावना को कम करने करने हेतु कम्प्युटर का प्रयोग प्रारम्भ कर दिया है। परीक्षा परिणामों के अंकपत्र तथा प्रमाणपत्र कम्प्युटर पर तैयार कराना एक सामान्य सी बात हो गयी है। वस्तुत: कम्प्युटर परीक्षा के कार्य को अधिक नियोजित, सहज, व्यवस्थित,तथा त्रुटि रहित ढंग से तीव्र गति के साथ सम्पन्न कर सकते हैं। परीक्षा संबंधी कार्य में कम्प्युटर के निम्न उपयोग हो सकते हैं-

I. प्रश्नपत्रों के निर्माण में
II. प्रश्नों के संग्रहण में
III. परीक्षा संबंधी सूचनाओं के संग्रह व समूहन में
IV. परीक्षा परिणामों के संग्रह तथा सारणीयन में
V. अंकपत्र व प्रमाणपत्र तैयार करने में
VI. परीक्षा सुधार के क्षेत्र में शोध कार्य करने में

प्रश्नों को तैयार करने के कार्य में कम्प्युटर महत्वपूर्ण सहायता कर सकता है। कम्प्युटर की सहायता से प्रश्नों का पद विश्लेषण (Item Analysis)करना बहुत ही आसान है। कम्प्युटर में प्रश्नों को संग्रहीत करना अधिक सुविधाजनक होता है। इसके अतिरिक्त प्रश्नों में आवश्यकतानुसार संशोधन करना तथा नवीन प्रश्नों को समाहित करना संभव होता है। कम्प्युटर में संग्रहीत प्रश्नों का समूह एक उपयोगी प्रश्न बैंक का कार्य कर सकता है। कम्प्युटर पर प्रश्नों का वर्गीकरण उनकी विषयवस्तु

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

तथा कठिनाइयों की सहायता से अधिक तार्किक ढंग से किया जा सकता है। कम्प्युटर की सहायता से परीक्षा कार्य का संचालन अधिक व्यवस्थित ढंग से तथा अधिक शीघ्रता से और गति से संपादित किया जा सकता है। विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर बैठने वाले परीक्षार्थियों से संबन्धित सूचनाएँ कम्प्युटर में संग्रहित करके उनका आवश्यकतानुसार समूहन व वर्गीकरण किया जा सकता है। वस्तुनिष्ठ परीक्षणों का अंकन कार्य कम्प्युटर त्रुटि रहित ढंग से अधिक शीघ्रता से कर सकता है। परीक्षा परिणामों को तैयार करने में भी कम्प्युटर एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। छात्रों के द्वारा विभिन्न विषयों/प्रश्नपत्रों में प्राप्त अंकों को कम्प्युटर में प्रविष्ट करा देने के उपरांत कम्प्युटर अत्यंत शीघ्रता से परीक्षा परिणाम तैयार करके छात्रों के अंकपत्र व प्रमाणपत्र उपलब्ध करा सकता है। कम्प्युटर में सूचनाओं/परीक्षा परिणामों को खोजना बहुत ही सरल होता है। कम्प्युटर में किए गए कार्यों में त्रुटि न होने का विश्वास रहने के कारण एक ओर जहां कम्प्युटर परीक्षा कार्य को सुगम बनाता है तथा उसे गति प्रदान करता है वहीं दूसरी ओर वह परीक्षाओं की साख को भी बढ़ाता है।

सपुस्तकीय परीक्षा प्रणाली (Open Book Examination)-शिक्षा के परीक्षा केन्द्रित होने के कारण प्रमाण पत्रों तथा अंकों पत्रों को प्राप्त करना शिक्षा का पर्याय मान लिया गया। परिणामस्वरूप परीक्षा में अनैतिक तथा अविधिक आचरण को बढ़ावा मिला। नकल की प्रवृत्ति दिनोंदिन बढ़ती गयी जिससे परीक्षा अपनी मूल उद्देश्य – छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध व कौशल के मापन से दूर होती चली गयी। सामूहिक नकल पर अंकुश लगाने केआर विकल्प के रूप में सपुस्तकीय परीक्षा प्रणाली का प्रादुर्भाव हुआ जो अनेक बाधाओं तथा कठिनाइयों के बावजूद नकल की समस्या पर अंकुश लगाने में उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

खुली पुस्तक परीक्षा से तात्पर्य ऐसी परीक्षा से है जिसमें छात्रों के परीक्षा अवधि में पुस्तक साथ रखने तथा उसके उपयोग की पूरी स्वतन्त्रता हो। पुस्तक से तात्पर्य पाठ्यपुस्तक अथवा संदर्भ पुस्तक है न की गाइड बुक। खुली पुस्तक परीक्षा की मान्यता है कि छात्रों में ज्ञान संचय के परंपरागत संकुचित दृष्टिकोण को समाप्त कर बोध, चिंतन, मनन, विश्लेषण, तर्कतथा उच्चस्तरीय मानसिक योग्यता का विकास शिक्षा का लक्ष्य हो। इससे छात्रों में रटने की प्रवृत्ति को हतोत्साहित किया जा सकता है और उच्चस्तरीय मौलिक चिंतन की योग्यता को बढ़ावा मिल सकेगा। इस प्रयास से छात्र किताबी ज्ञान से आगे बढ़कर सृजनात्मक चिंतन कर सकेंगे। चूंकि खुली परीक्षा प्रणाली की शिक्षा के उद्देश्यों के संबंध में अलग दृष्टिकोण है अत: इसमें पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रकृति भी परंपरागत परीक्षा से भिन्न निर्धारित की गयी है। परंपरागत परीक्षा के वर्णनात्मक तथा व्याख्यात्मक प्रश्नों के स्थान पर खुली परीक्षा प्रणाली में – बोध, कौशल, विश्लेषण, संश्लेषल, अनुप्रयोग तथा मौलिक चिंतन की क्षमता को मापने का प्रयास किया जा सकता है। ऐसे प्रश्नों का सीधा उत्तर पुस्तकों में उपलब्ध न होगा बल्कि पुस्तकों में उपलब्ध तथ्यों के आधार पर नवीन सन्दर्भ में, नवीन संभावनाओं की खोज तथा सृजन की क्षमता का प्रदर्शन करना होगा। परीक्षा में रटंत स्मरण का महत्व समाप्त हो जाएगा और उच्च स्तरीय बौद्धिक क्षमता के विकास को बल मिलेगा। उच्च कक्षाओं में खुली परीक्षा प्रणाली को सार्थकता से प्रयुक्त किया जा सकता है जबकि छोटी कक्षाओं में इसके प्रयोग में व्यावहारिक कठिनाई आ सकती है।

महत्वपूर्ण संबंधित प्रश्न-

I. निबंधनिष्ठ परीक्षण को परिभाषित कीजिए। निबंधनिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ परीक्षण की तुलना कीजिए।
   Define essay type test. Comparison with essay type test and objective type test.16
II. 'मूल्यांकन में कम्प्युटर का योगदान' विषय पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिए।
   Write a short essay on 'Contribution of Computer in Evaluation'.
III. "ऑनलाइन और कम्प्युटर पर आधारित परीक्षा सभी प्रकार के शिक्षार्थियों के लिए फायदेमंद है।"परीक्षा के गुण के संबंध में वर्णन करें।

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

"Online and computer based examination is beneficial for all types of learners." Explain in the context of merits of the test. 2017

IV. निम्नलिखित में से किन्ही दो पर टिप्पणियाँ लिखे :

a) इकाई परीक्षण, अर्धवार्षिक और वार्षिक परीक्षा में अन्तर
Difference among unit test, half-yearly and annual examinations

b) अंकन और ग्रेडिंग में अन्तर
Difference between marking and grading

c) वस्तुनिष्ठता और व्यक्तिनिष्ठता/विषयगम्यता के बीच अन्तर
Difference between objectivity and subjectivity

d) खुली और बंद किताब परीक्षाओं में अन्तर
Difference between open and closed examination 2017

V. निम्नलिखित में अन्तर बताइये :

a) मार्किंग और ग्रेडिंग
Marking and Grading

b) वस्तुनिष्ठता एवं व्यक्तिनिष्ठता
Objectivity and subjectivity 2018

VI. कोचिंग संस्थाओं के परिप्रेक्ष्य मे, प्रवेश परीक्षा एवं सार्वजनिक परीक्षा के शिक्षण एवं अधिगम पर पड़ने वाले प्रभावों की व्याख्या कीजिए।
Explain the impact of entrance test and public examination on teaching and learning in the light of coaching institutes. 2018

संदर्भ (References)-

- गुप्ता,प्रो॰एस॰पी॰ एवं गुप्ता,डॉ अलका (2011).आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन.शारदा पुस्तक भवन ,इलाहाबाद-2.
- श्रीवास्तव, डॉ डी. एन.(2017).अधिगम का आंकलन (1st Ed.). श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा-2.
- पाण्डेय, डॉ के॰ पी॰(2007). शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन (प्रथम संस्करण).विश्वविद्यालय प्रकाशन ,वाराणसी .
- भटनागर, डॉ ए॰ बी॰ एवं भटनागर, डॉ मीनाक्षी (2010). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन और मूल्यांकन. आर॰ लाल॰ बुक डिपो, मेरठ.

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

5. Evolving learning sequences (learning activities) for on line as well as face to face situations

MCEM
Maitreya College of Education & Management
Shaping Education
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

PPT ONLINE CLASS

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

CONCEPT MAPPING GOOGLE MEET/ONLINE TEACHING

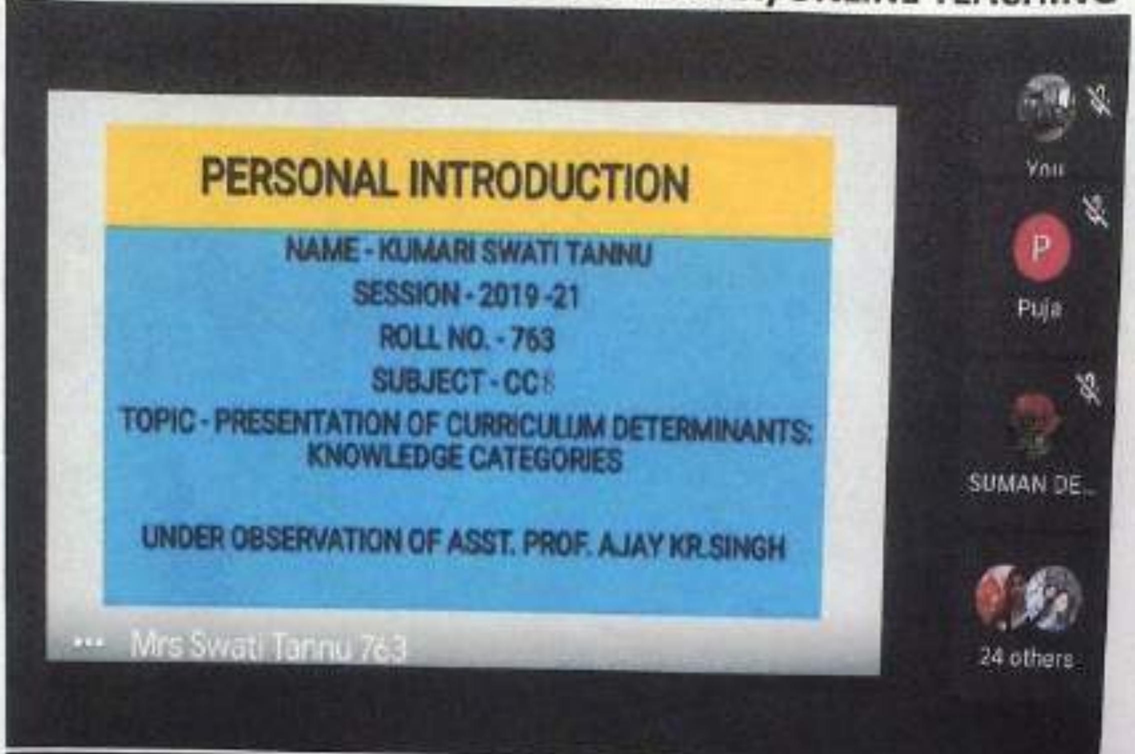

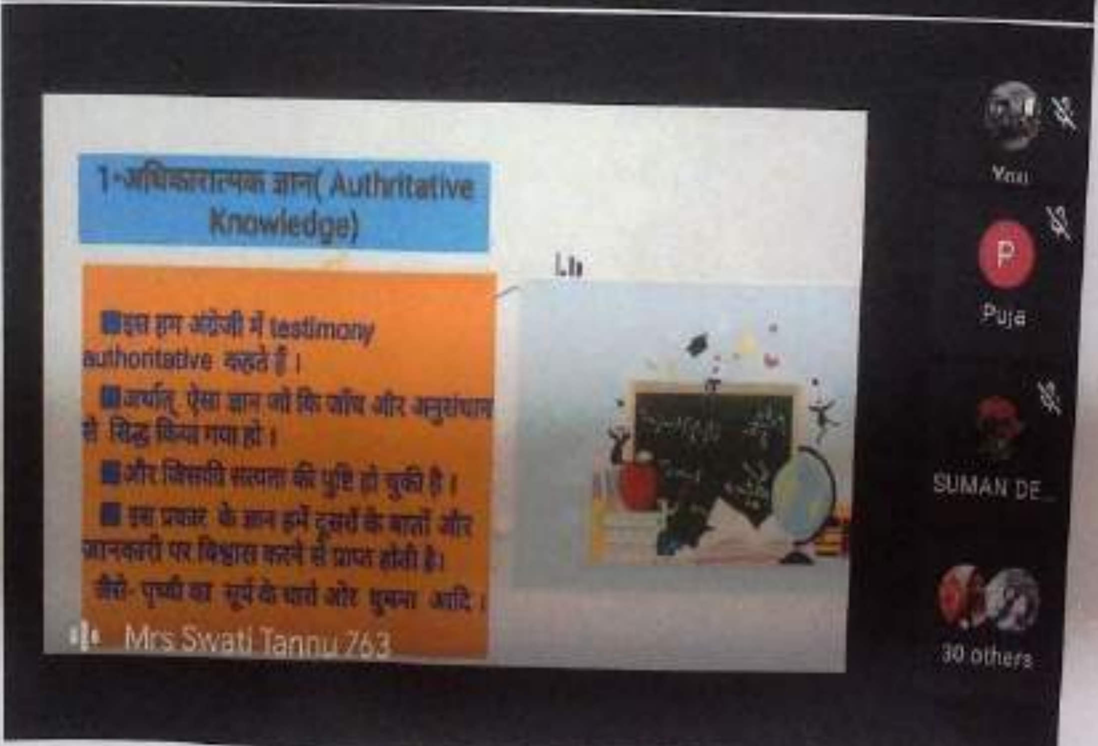

CONCEPT MAPPING

GOOGLE MEET/ONLINE TEACHING

MCEM
Maitreya College of Education & Management
Shaping Education
Affiliated to Aryabhatta Knowledge University, Patna

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin@maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin @maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in

PPT TRHROUGH GOOGLE MEET
पाठ्यचर्या का शाब्दिक अर्थ
पाठ्यचर्या दो शब्दों से मिलकर बना है पाठ्य और चर्या। पाठ्य का अर्थ है "पढ़ने योग्य" अथवा "पढ़ाने योग्य" तथा चर्या का अर्थ है "नियम पूर्वक अनुसरण"
अंग्रेजी में पाठ्यचर्या को करिकुलम कहते हैं Curriculum शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द Currer(करेरे) से हुई है जिसका अर्थ है -Race course (दौड़ का मैदान)।
इस प्रकार पाठ्यचर्या वह दौड़ का मैदान है जिस पर बालक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए दौड़ता है।
Dolly kumari , 752
You
Neha
SUMAN DE...
16 others
4.मानदंड(Criteria):-
समाज का मानदंड -संवैधानिक मूल्य,समता, समानता, बंधुता,स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय। सामाजिक मानदंड संस्कृति से संस्कृति और समाज से समाज में भिन्न होते हैं।
Monika kri 755
You
SUMAN DE...
34 others
Dolly kumari , 752
You
Neha
SUMAN DE...
18 others

:: प्रथम आंतरिक मूल्यांकन का मॉडल उत्तर ::

दीर्घ उत्तरीय उत्तर

Concept Mapping

(खण्ड - अ)

Teaching Method - Paper VI

(1) प्रश्न - शिक्षण प्रक्रिया में 'सुक्ष्म शिक्षण' की आवश्यकता क्यों है? सूक्ष्म शिक्षण चक्र के विभिन्न स्तरों की व्याख्या करें।

उत्तर - शिक्षण प्रशिक्षण संस्थाओं का प्रमुख कार्य प्रभावशाली शिक्षक तैयार करना है क्योंकि वर्तमान धारण, यह है कि शिक्षक केवल जन्मजात नहीहोते बल्कि बनाये जा सकते है। प्रशिक्षण संस्थाओं की दोष पूर्ण प्रक्रिया के कारण शिक्षण अभ्यास भी दोष पूर्ण हो जाती है। शिक्षण व्यवहार में सुधार के लिए एवं प्रभावशाली शिक्षक तैयार करने के लिए अनेक पृष्ठपोषण की प्रविधियाँ प्रयोग में लायी जाती है, जिसमें से एक सूक्ष्म शिक्षण हैं।

सूक्ष्म शिक्षण एक विश्लेषित शिक्षण है जिसमें शिक्षण की प्रक्रिया लघु रूप में कम विद्यार्थियों वाली कक्षा के सामने अल्प समय में सम्पन्न की जाती है। इसका प्रयोग सेवारत एवं सेवापूर्व शिक्षकों के व्यावसायिक विकास के लिए किया जाता हैं। सूक्ष्म शिक्षण अध्यापकों को शिक्षण के अभ्यास के लिए ऐसी स्थिति प्रदान करता है जिससे कक्षा- शिक्षण की सामान्य जटिलताएँ कम हो जाती हैं। इसनें अध्यापक बहुत अधिक मात्रा में अपने शिक्षण-व्यवहार के लिए प्रतिपुष्टि प्राप्त करता है।

सूक्ष्म शिक्षण - सूक्ष्म शिक्षण, प्रशिक्षण की प्रयोगशाला विधि है। इसके अन्तर्गत कक्षा का आकार छोटा तथा छात्रों की संख्या कम होती है छात्र अध्यापक छोटी विषय-वस्तु पर सूक्ष्म पाठ-योजना बनाकर 5 से 10 मिनट कक्षा में छात्रों या सहपाठियों को पढ़ाता है। पर्यवेक्षक द्वारा पढ़ाये गये पाठ का निरीक्षण अध्यापक दिये गये सुझावों के आधार पर पाठ-योजना में सुधार करके पुन: पाठ-नियोजन करता है। इसके पश्चात पुनर्योजिक पाठ को दूसरी कक्षा या समूह के छात्रों को पुनः पढाया (Riteach) है। पुनर्शिक्षण पाठ को पुनः पर्यवेक्षित किया जाता है और उसके आधार पर पृष्ठ पोषण प्रदान किया जाता है। इस पृष्ठपोषण के आधार पर छात्र अध्यापक पुन: पाठ को नियोजित करता है। इस प्रकार एक सूक्ष्म शिक्षण चक्र (Micro Teaching Cycle) पूर्ण हो जाता है।

सूक्ष्म शिक्षण चक्र (Micro Teaching Cycle)

(योजना) शिक्षण (Teach) ⇨ पृष्ठपोषण (Feedback) ⇨ पुनः योजना (Re-plan) ⇨ पुनः शिक्षण (Re-teach) ⇨ पुनः पृष्ठपोषण (Re-feedback)

हमारे देश में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (N.C.E.R.T), नई दिल्ली द्वारा सूक्ष्म शिक्षण की अवस्थाएँ विकसीत की गई है जो निम्न प्रकार है।

(i) शिक्षण 6 मिनट
(ii) पृष्ठपोषण 6 मिनट
(iii) पुनः योजना 12 मिनट
(iv) पुनः शिक्षण 6 मिनट
(v) पुनः पृष्ठपोषण 6 मिनट
कुल - 36 मिनट

इन सूक्ष्म शिक्षण पदों की विस्तार से व्याख्या किया जाए जिससे इनकी विशेषताएँ स्पष्ट हो सके।

(2) प्रश्न - पाठ्य योजना से आप क्या समझते है? किसी कक्षा विशेष की 35 मिनट की पाठ्य योजना तैयार करें।

उत्तर - पाठ्य योजना का अर्थ - साधारण शब्दों में पाठ-योजना का अर्थ उस योजना से है जो अध्यापक कक्षा में

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से पूर्व पाठ के विभिन्न पक्षों के बारे में सोचकर तैयार करता है जिसके परिणामस्व छात्र पाठ को भली प्रकार ग्रहण कर सकें।

'पाठ योजना' शिक्षण-कार्य आरम्भ करने से पहले शिक्षण-कार्यक्रम को व्यक्त करती है यह कार्यक्रम बनाते समय अध्यापक कोशिक्षा के व्यापक उद्देश्य, पाठ्य विषय के लक्ष्य, विद्यार्थियों की रूचियाँ एवं योग्यताओं को सम्मुख रखकर अनुकूल शिक्षण-साधनों तथा शिक्षण विधियों को निश्चित एवं व्यवस्थित करना होता है। डेविस के अनुसार पाठ नियोजन की परिभाषा, ''कक्षा में जाने से पूर्व शिक्षक को पूरी तैयारी कर लेनी चाहिए क्योंकि शिक्षक की प्रगति के लिए कोई बात इतनी घातक नहीं है जितनी की शिक्षा की अपूर्ण तैयारी।''

नोट - सभी छात्र अपने-अपने शिक्षण की पाठ योजना बनायें। जिसका प्रकरण आपके द्वारा चुने गये दोनों शिक्षण विषयों में से हो। जिस पर आधारित 35 मिनट की पाठ योजना तैयार करें जो आप ने शिक्षण अनुभव के दौरान तैयार कर अपने विद्यालय में पढ़ाया हो।

(3) प्रश्न - क्रियात्मक अनुसंधान से आप क्या समझते है? इनके शोध का क्रमबद्ध रिपोर्ट लिखें।

उत्तर - **क्रियात्मक अनुसंधान का अर्थ** - 'क्रियात्मक अनुसंधान' शिक्षा तकनीकी एवं अनुसंधान के क्षेत्र में एक नया दृष्टिकोण तथा व्यवस्था है। विद्यालय की कार्य-प्रणाली में सुधार एवं परिवर्तन लाने के लिए यह एक नवीन प्रभावशाली तथा महत्वपूर्ण साधन है। क्रियात्मक अनुसंधान में विद्यालय की तात्कालीक समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। इसमें स्थानीय समस्याओं को हल करने के ध्येय से शोध कार्य सम्पादित किया जाता है। इसका उद्देश्य विद्यालय की कार्यशैली को सुधारना है इसमें वैज्ञानिक पद्धति से कार्य करने की क्षमता का विकास करता है।

क्रियात्मक अनुसंधान की परिभाषा - जॉन डब्लू वेस्ट के अनुसार, ''क्रियात्मक अनुसंधान किसी सिद्धान्त के विकास की अपेक्षा तात्कालिक उपयोग पर केन्द्रित रहता है। इसमें वर्तमान स्थानीय परिस्थितियों से संबंधित वास्तविक समस्याओं पर ही बल दिया जाता है।''

मील के अनुसार, ''क्रियात्मक अनुसंधान, अनुसंधान का वह रूप है जिसमें उन परिकल्पनाओं की जाँच करती है, का कथन सत्यात्मक परिस्थितियों के सुधार के रूप में किया जाता है।''

इस प्रकार क्रियात्मक अनुसंधान एक विधि है जिसके द्वारा कार्य-प्रणाली की समस्याओं का अध्ययन वस्तुनिष्ठ रूप में किया जाता है और उनमें सुधार किया जाता है।

क्रियात्मक अनुसंधान क्रमबद्धता - प्रशिक्षु किसी समस्या का चयन कर क्रियात्मक अनुसंधान के निम्नलिखित सोपान के आधार पर क्रमबद्ध ढंग से एक रिपोर्ट लिखें जो आपके विद्यालय अनुभव के समय आपके विद्यालय में आप ने समस्या के रूप में चयन किया जा देखा।

क्रियात्मक अनुसंधान के सोपान (Stepal Action Research)

(I) प्रस्तावना (Introduction)

(ii) समस्या कथन (Statement of Problem)

(iii) समस्या का व्याख्या (Interpretation of Problem)

(iv) परिकल्पना निर्माण (Hypothesis Formulation)

(v) सामग्री (Material)

(vi) विधि (Procedure)

(vii) वास्तविक प्रयोग (Actual Experiment)

(viii) क्रियात्मक शोध के परिणाम तथा मूल्यांकन (Result & Evaluation of results of Action Research)
(ix) प्राप्त परिणामें का उपयोग (Uses of Result)

(4) प्रश्न - शिक्षण अभ्यास के दौरान अपने विद्यालय में प्राप्त अनुभवों को लिखें।

उत्तर - नोट - अपने विद्यालय शिक्षण अनुभव के दौरान प्राप्त अनुभव को अपने शब्दों में प्रथम दिन से शिक्षण अनुभव कार्यक्रम के अन्तिम दिन तक प्राप्त विद्यालयी अनुभव को लिखें जिसमें निम्न बातों को ध्यान में रखकर अनुभव होना चाहिए। ऐसी अपेक्षा करते है।

(i) शिक्षण अनुभव के लिए आपको विद्यालय अनुभव के लिए चयनित किया गया तो आपका प्रथम अनुभव कैसा हुआ। जैसे - विद्यालय कैसा होगा, वहाँ का शैक्षिक माहौल कैसा होगा, छात्र कैसे होंगे आदि।
(ii) विद्यालय मे प्रथम दिन पहुँचने पर, आपको विद्यालय भवन, शिक्षक, छात्र इत्यादि कैसे लगें।
(iii) प्रथम कक्षा-कक्ष शिक्षण अनुभव कैसा था? इसी प्रकार पूरे शिक्षण अभ्यास के दौरान आपने कैसे कैसे अनुभव प्राप्त किये क्रम बद्ध ढंग से लिखे।
(iv) प्रथम दिन से प्रारम्भ आपका शिक्षण अनुभव तथा अन्तिम दिन के अनुभव के बाद आप कैसा महसूस करते है। शिक्षण अनुभव प्राप्त करने के बाद विद्यालय शिक्षण एवं छात्रों के प्रति आपके दृष्टिकोण में कैसे-कैसे परिवर्तन आये।
(v) विद्यालय अनुभव के समय किये गये सभी सत्रीय कार्यों को भी सविस्तार लिखे।

नोट - इन सभी बातों को अपने विद्यालय अनुभव में लिखें।

(खण्ड - ब)

लघुउत्तरीय उत्तर

5. (i)प्रश्न- सामान्य उद्देश्य एवं विशिष्ट उद्देश्य में अन्तर लिखिए।

उत्तर -

सामान्य उद्देश	विशिष्ट उद्देश
(i) सामान्य उद्देश्यों का निर्धारण दर्शन द्वारा होता है।	(i) विशिष्ट उद्देश्यों का निर्धारण का आधार मनोविज्ञान है।
(ii) इसका स्वरूप अधिक व्यापक है।	(ii) इसका स्वरूप संकुचित एवं विशिष्ट होता है।
(iii) विद्यालय के सभी विषयों के सामान्य उद्देश्य विषय पर आधारित होते हैं।	(iii) इसके विशिष्ट उद्देश्या कक्षा शिक्षक के प्रकरण पर आधारित होते है।
(iv) इसकी प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण विद्यालय कार्यक्रम, समाज तथा राष्ट्र उत्तरदायी होता है।	(iv) इनकी प्राप्ति का उत्तरदायित्व शिक्षक तथा पाठ विशेष की विषय-वस्तु पर होता है।
(v) इसकी प्राप्ति लम्बी अवधि में की जाती है।	(v) इनकी प्राप्ति शिक्षण के एक कालांश में भी की जा सकती है।
(vi) सामान्य उद्देश्य में आदर्शवादिता होती है। अतः इसे पूर्ण रूप से प्राप्त करना सम्भव नहीं है।	(vi) विशिष्ट उद्देश्यों में व्यावहारिकता होती है। अतः इनकी प्राप्ति सम्भव है।
(vii) ये कक्षा की शिक्षण रणनीति को निर्धारित करने में सहायक नहीं है।	(vii) ये कक्षा की शिक्षण रणनीति को निर्धारित करने में सहायता प्रदान करते है।
(viii) इनके द्वारा शिक्षा की व्यवस्था की जाती है।	(viii) इनके द्वारा शिक्षण का नियोजन किया जाता है।

(ii)प्रश्न- पाठ्य सहगामी क्रियाएँ किसे कहते है?

उत्तर - 'शिक्षा का लक्ष्य' छात्र का सर्वांगीण विकास करना है। छात्रों के सर्वांगीण विकास में पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का उतना ही महत्त्व है जितना की अन्य विषयों का। 'जीवन की शिक्षा' देने के लिए यह पाठ्यान्तर क्रियाएँ आयोजित की जाती है। अब केवल पुस्तकीय ज्ञान देना उद्देश्य न रह गया वरन् बालक के व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलुओं का जैसे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा नैतिक गुणों आदि का विकास करना उद्देश्य हो गया है। इसे पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग माना जाने लगा है। जिसके अन्तर्गत विद्यालय में खेलकुद, वाद-विवाद, प्रतियोगिता, संगीत, नाटक आदि छात्र क्रियायें करायी जाती है।

इस प्रकार कह सकते है कि पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं का तात्पर्य शिक्षक के निर्देशन एवं सहायता से छात्रों द्वारा विद्यालय या विद्यालय के बाहर सम्पादित की जाने वाली उन क्रियाओं या कार्यक्रम से है जिन्हें शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य जैसे बालकों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास की पूर्ति करने के लिए पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग माना जाता है।

(iii)प्रश्न- एक अच्छे शिक्षक के गुण लिखिए?

उत्तर - एक शिक्षक में यदि निम्न विशेषतायें पायी जाती है तो उसे हम अच्छा शिक्षक कह सकते है। जैसे -

(i) अच्छे शिक्षक का व्यवहार छात्रों के प्रति सदैव निष्पक्ष हो।
(ii) अच्छे शिक्षक का दृष्टिकोण प्रजातन्त्रवादी हो।
(iii) इसकी रूचि अध्ययन एवं अध्यापनमेंहो।
(iv) वह अपने व्यवसाय के प्रति प्रेम रखता हो।
(v) इसका व्यवहार छात्रों के प्रति प्रेम एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार रखता हो।
(vi) इसकी उच्चारण में शुद्धता एवं वाणी में मधुरता हो।
(vii) इसको बाल मनोविज्ञान एवं मनोविज्ञान का ज्ञान हो।
(viii) इसको शिक्षण पद्धति का ज्ञान हो तथा शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग शिक्षण में करता हो।
(ix) इसे अपने विषयवस्तु पर पूर्ण अधिकार हो।
(x) इसका व्यवहार व दृष्टिकोण आशावादी हो।
(xi) एक अच्छा शिक्षक प्रत्येक कार्य को उचित समय पर करता है। जिसको देख कर छात्र भी उसका अनुसरण कर सकें।
(xii) वह सदैव न्यायप्रिय व्यवहार करें तथा उसमें धैर्य की प्रधानता हो।
(xiii) उसमें राष्ट्रीयता की भावना भरी हो तथा राजनैतिक पक्षपात से मुक्त हो।
(xiv) वह शिक्षा के उद्देश्यों के प्रति हमेशा जागरूक हो।
(xv) वह पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाओं में रूचि रखता हो।
(xvi) वह छात्रों के लिए एक अच्छा मार्गदर्शक एवं पथ प्रदर्शक हो।

(iv)प्रश्न- शिक्षण में पुनर्बलन का क्या महत्त्व है?

उत्तर - पुनर्बलन से हमारा अभिप्राय है ऐसे उद्दीपनों का प्रयोग करना जिनके प्रस्तुतीकरण या जिन्हें हटाने से किसी अनुक्रिया के होने का आशा बढ़ जाती है। इन उद्दीपनों में पुरस्कार, शाबाशी देना, प्रशंसा करना, कमियाँ बताना आदि क्रियायें आती है।

पुनर्बलन दो प्रकार के होते है -

(i) धनात्मक पुनर्बलन

(ii) ऋणात्मक पुनर्वलन

धनात्मक पुनर्वलन द्वारा छात्रों के वांछित व्यवहारों को प्रबल बनाया जाता है।

ऋणात्मक पुनर्बलन द्वारा छात्रों के गलत या अवांछित व्यवहारो को दूर करने का प्रयास किया जाता है।

शोध हमे बताते है कि धनात्मक पुनर्वलन का प्रभाव, ऋणात्मक पुनर्बलन की तुलना में ज्यादा अच्छा होता है अत: शिक्षण में पुनर्वलन कौशल का अभ्यास इस प्रकार कराया जाता है कि शिक्षक धनात्मक पुर्नवलन का प्रयोग अधिक से अधिक तथा ऋणात्मक पुनर्वलन का प्रयोग कम से कम कक्षा शिक्षण के क्षेत्र में करें।

पुनर्वलन कौशल के घटक -

(i) प्रशंसात्मक कथनों का प्रयोग,

(ii) हावभाव तथा अन्य अशाब्दिक संकेतो का प्रयोग,

(iii) छात्रों के विचारों एवं भावों से अपनी सहमति प्रकट करना,

(iv) नकारात्मक शाब्दिक कथनों का प्रयोग,

(v) नकारात्मक अशाब्दिक कथनों का प्रयोग,

(vi) छात्रों के सही उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखना।

(v)प्रश्न- ब्लूम के अनुसार शैक्षिक उद्देश्यों को कितने भागों में बाँटा गया है?

उत्तर - ब्लूम के अनुसार शैक्षिक उद्देश्यों को तीन भागों में बाँटते है -

(i) ज्ञानात्मक उद्देश्य, (ii) भावात्मक उद्देश्य, (iii) क्रियात्मक उद्देश्य

(i) ज्ञानात्मक उद्देश्य को ब्लूम ने छ: भागों में बाँटा है -

(A) ज्ञान (Knowledge), (B) बोध (Comprehension), (C) अनुप्रयोग (Application), (D) विश्लेषण (Analysis) (E) संश्लेषण (Synthesis) एवं (F) मूल्यांकन (Evaluation).

(vi)प्रश्न- पुनर्वलन एवं पृष्ठपोषण में अन्तर लिखिए?

उत्तर - पुनर्वलन से तात्पर्य किसी अपेक्षित अनुक्रिया के प्रतिफल के रूप में किसी ऐसे सुखकारी उद्दीपक की प्रस्तुति है जो प्राणी को अपेक्षित अनुक्रिया बार-बार करने के लिए प्रेरित करता है।

पृष्ठपोषण - पृष्ठपोषण किसी काम की गुणवत्ता के विषय में दी गई सूचना या टिप्पणी है।

(vii)प्रश्न- दृश्य-श्रव्य शिक्षण सहायक सामग्री से आप क्या समझते है?

उत्तर - श्रव्य-दृश्य शिक्षण सहायक सामग्री वे साधन है जिन्हें हम आँखों से देख सकते है, और कानों से उनसे संबंधित ध्वनि सुन सकते है। वे प्रक्रियायें जिनमें दृश्य तथा श्रव्य इन्द्रियाँ सक्रिय होकर भाग लेती है, श्रव्य-दृश्य साधन कहलाती है। अन्य शब्दो में श्रव्य-दृश्य सामग्री वह सामग्री, उपकरण तथा युक्तियाँ है जिनके प्रयोग करने से विभिन्न शिक्षण परिस्थितियों में छात्रों और समूहों के मध्य प्रभावशाली ढंग से ज्ञान का संचार होता है। ये उपकरण है - प्रोजेक्टर, टी.वी., चलचित्र, वीडियो, कम्प्यूटर आदि।

MCEM मैत्रेय कॉलेज ऑफ एजुकेशन एण्ड मैनेजमेंट, हाजीपुर

Notes on Lesson (B.Ed. Faculty)

per : 0C विद्यालय संगठन एवं नेतृत्व की समझ Year : 1st ☐ 2nd ☑

nit : 1st Sub Unit : नेता के रूप में प्रधानाध्यापक के विभिन्न कार्य

te : 12 मार्च 2018 Time/Period :

bjective of Lesson : प्रशिक्षुओं को बोध कराना की प्रधानाध्यापक विभिन्न क्षेत्रों में कौन-कौन से कार्य करता है।

Points of Discussion	Faculty Activities and Method
प्रधानाध्यापक के कार्य –	व्याख्या (Concept mapping) प्रधानाध्यापक के कार्य **प्रशासनिक कार्य** सम्पादन कार्य: ① छात्रों की भर्ती करना ② छात्रों का प्रवेश एवं वर्गीकरण ③ विद्यालय बजट ④ समय-सारणी निर्माण ⑤ कार्य विभाजन ⑥ पुस्तकों का चयन ⑦ अनुशासन बनाना ⑧ विद्यालय संपदा का सौन्दर्यीकरण ⑨ पाठ्य सहगामी क्रियाओं की व्यवस्था निरीक्षण कार्य: ① अध्यापक कार्य का निरीक्षण ② कार्यालय कार्यों का निरीक्षण ③ छात्रावास निरीक्षण ④ सामान्य निरीक्षण **शैक्षणिक कार्य** ① शिक्षक के रूप में कार्य ② शिक्षक प्रशिक्षण के कार्य। **सम्पर्क कार्य** ① शिक्षकों से सम्पर्क ② छात्रों से सम्पर्क ③ अधिकारियों से सम्पर्क ④ अभिभावकों से सम्पर्क ⑤ समाज से सम्पर्क

Lesson Summary : कक्षा-शिक्षण के दौरान प्रधानाध्यापक के कार्यों की धारणा निर्धारण हेतु सम्प्रत्यय निर्माण का कार्य किया गया तथा उसपर चर्चा की गयी।

Assignment : प्रधानाध्यापक के प्रमुख तथा गौण कार्यों को लिखें।

Reference : यादव, के. के. - विद्यालय प्रशासन, संगठन, पर्यवेक्षण तथा प्रबन्धन अग्रवाल प्रकाशन आगरा।

Question Asked by Students : प्रधानाध्यापक को सभी कार्य कैसे करना है।

Faculty Signature
Ajay Kumar Singh
Asst. Prof., MCEM, Hajipur

यदि हम उदाहरण के रूप में 2005 की 'राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा' को लें, तो इसकी रचना पाठ्यचर्या के दार्शनिक व मनोवैज्ञानिक आधार को पुनः सुधार हेतु की गई थी। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा ने पाठ्यचर्या का अधिक जीवंत व सार्थक बनाने हेतु इसको बालकेंद्रित करने हेतु व इसे बालक के अनुभव से जोड़ते हुए कुछ ठोस सुझाव दिए थे। इसमें भारत में व्याप्त कुछ चुनौतियों जैसे सामाजिक असमानता, पर्यावरणीय ह्रास से निपटने हेतु पाठ्यचर्या में उचित परिवर्तन किए गए थे। पाठ्यचर्या की रूपरेखा का पाठ्यचर्या व पाठ्यवस्तु में गहन संबंध होता है। जिसे नीचे दिए गए रेखाचित्रीय निरूपण से समझा जा सकता-

Concept Mapping

पाठ्यचर्या की रूपरेखा		
समाज एवं मनुष्य से संबंधित मान्यताएं	शिक्षा के लक्ष्य	
ज्ञानमीमांसा से संबंधित मान्यताएं है	स्तर विशिष्ट उद्देश्य	
	विषयवस्तु के चयन एवं व्यवस्थापन के सिद्धांत	पाठ्यक्रम का विवरण
	अच्छे तरीकों के आधार	प्रस्तावित कक्षायी अभ्यास
	अच्छी सामग्री के आधार	पाठ्यपुस्तकें एवं शिक्षण अधिगम की सामग्री
अधिगम से संबंधित मान्यताएं	मूल्यांकन के सिद्धांत	मूल्यांकन की योजना
बच्चे एवं उनके परिवेश की मान्य समझ		
पाठ्यचर्या की नींव	पाठ्यचर्या केन्द्रित	पाठ्यचर्या का विवरण

पाठ्यचर्या की रूपरेखा, कुछ निश्चित आधारिक संकल्पनाओं पर आधारित होती है। इन्हें आंतरिक रूप से सुदृढ़ व शिक्षा के प्रति उत्तरदायी लोगों की पूर्ण सहमति मिलनी चाहिए। ये आधारित संकल्पनाएं राष्ट्रीय फोकस समूह द्वारा चार भागों में बांट दी गई है।

1. मानव जाति व समाज से संबंधित मान्यताएं, जिनमें उदाहरण के रूप में- शिक्षा के उद्देश्य, न्याय, समानता व स्वतंत्रता पर आधारित लोकतंत्रीय व बहुसांस्कृतिक समाज का निर्माण करना होगा।
2. दूसरे प्रकार की संकल्पनाएं ज्ञानमीमांसा से संबंधित हैं। चूंकि ज्ञान, विश्वास व कार्य को प्रभावित करती है अतः पाठ्यचर्या के निर्माण हेतु ज्ञान में मीमांसात्मक संकल्पनाओं के साथ ही अधिगम संबंधी संकल्पनाओं का भी चयन सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

EPIP Campus, Hajipur Industrial Area,
Hajipur, Vaishali - 844 102 (Bihar), Ph. : 06224-271834
e-mail : admin@maitreyaedu.co.in, Web : www.maitreyaedu.co.in